



सत्यमेव जयते

नवकिरण



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वर्ष 2024

43वां अंक



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हरियाणा, चण्डीगढ़



प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन



राजभाषा परिवार

स्वत्वाधिकार

प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी) हरियाणा
चंडीगढ़ का कार्यालय

प्रकाशन

“नवकिरण”

प्रकाशक

प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी) हरियाणा,
चंडीगढ़ का कार्यालय

अंक : तैंतालीसवां

पत्रिका परिवार -

मुख्य संरक्षक

श्री नवनीत गुप्ता
प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

सुश्री वीनस चौधरी
वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशा.)

संपादक मंडल

प्रबंध संपादक

श्री रमेश कुमार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक

सुश्री डॉ. सुधा तिवारी
हिंदी अधिकारी

उप संपादक -

श्री विक्रम सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

सहभागी

श्री सुमित
लेखाकार

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	लेखक सर्व श्री/सुश्री/श्रीमती	पृष्ठ सं.
1	संदेश		1 - 8
2	मुख्य संरक्षक की कलम से	नवनीत गुप्ता	9
3	संरक्षक की कलम से	वीनस चौधरी	10
4	संपादक की कलम से	डॉ. सुधा तिवारी	11
5	भारत एक बहुभाषिक सांस्कृतिक और राजभाषा हिन्दी	डॉ. सुधा तिवारी	12
6	तीमारदार	आशीष	15
7	एक रोचक यात्रा	रमेश कुमार शर्मा	18
8	गुलाबी नगरी : जयपुर	किरण मीना	21
9	राजभाषा हिंदी : संवैधानिक प्रावधान	डॉ. सुधा तिवारी	23
10	सरदार पटेल एक अनोखी शख्सियत	रवि कुमार राज	26
11	थोड़ा जल्दी	अंकित कुमार ठाकुर	28
12	अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस	रितेश गुप्ता	29
13	आज कल की गर्मी	सुमित जांगड़ा	31
14	बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ	संदीप कुमार मान	33
15	माता-पिता	लोकेश	35
16	चाय	सुमित	36
17	नज़र रहती है	रविन्द्र कुमार	37
18	बारिश की मस्ती	अमनदीप सिंह	38
19	पर्यावरण की महत्ता	रितेश गुप्ता	39
20	मेरी माँ सबसे प्यारी	विक्रम सिंह	40
21	नारी	पंकज अरोड़ा	41
22	हमारी प्यारी धरती	विधांश अरोड़ा	42
23	बीते लम्हे	नरेन्द्र कुमार	43
24	मजबूरियाँ	विक्रम सिंह	44
25	हिन्दी दिवस पखवाड़ा		45
26	हिन्दी प्रोत्साहन योजना के विजयी प्रतिभागी		45
27	गृह पत्रिका नवकिरण के श्रेष्ठ लेखकों हेतु पुरस्कार		45
28	आप के पत्र		46
29	पुस्तक प्रदर्शनी - 2024		49 - 51
30	सांस्कृतिक झरोखे से कार्यालय		53 - 54
31	कार्यालयपयोगी वाक्यांश - द्विभाषी		55

अस्वीकरण - पत्रिका में व्यक्त विचार एवं भावनाएं लेखक के अपने हैं, अतः कार्यालय एवं संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नवकिरण हिंदी पत्रिका 43वां अंक

नवकिरण परिवार



श्री नवनीत गुप्ता, प्रधान महालेखाकार
मुख्य संरक्षक



सुश्री वीनस चौधरी
संरक्षक



श्री रमेश कुमार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
प्रबंध संपादक



सुश्री डॉ. सुधा तिवारी, हिंदी अधिकारी
संपादक



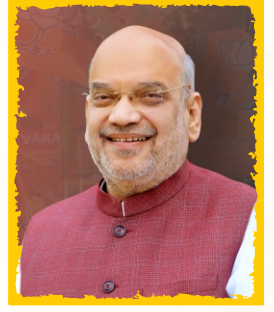
श्री विक्रम सिंह, कनिष्ठ अनुवादक
उप-संपादक



श्री सुमित, लेखाकार
सहयोगी

अमित शाह

गृहमंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिन्दी साहित्य सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमोवशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया है।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासों ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदरबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंढाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अद्भुत रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगांठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब अंतराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में अधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन को 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा के कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोष 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

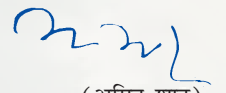
दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

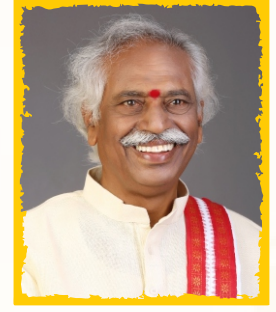
वंदे मातरम !

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2024


(अमित शाह)

बंडारू दत्तात्रेय
राज्यपाल, हरियाणा,
चण्डीगढ़ ।



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा के कार्यालय द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी राजभाषा हिंदी में विभागीय पत्रिका 'नवकिरण' के 43वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है, जोकि एक सराहनीय प्रयास है। जिसके लिए मैं आपको हार्दिक मुबारकबाद एवं शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

यह भी एक सराहनीय बात है कि विभागीय हिंदी पत्रिकाओं का मुख्य उद्देश्य कार्यालयीन कार्य में हिंदी को बढ़ावा देना, कार्यालय में वर्ष भर आयोजित विभिन्न प्रकार की विभागीय गतिविधियों व सांस्कृतिक कार्यक्रमों से अवगत करवाने के साथ ही अधिकारियों/कर्मचारियों की रचनात्मक व सृजनात्मक क्षमता को विकसित करना, राजभाषा के प्रति स्नेह, उत्साह एवं रुचि उत्पन्न करना है।

यह पत्रिका राजभाषा के प्रति श्रद्धाभाव को जागृत करते हुए राष्ट्रीय प्रेम को भी उजागर करती है। जिसमें ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद एवं सुरुचिपूर्ण कविता, कहानी, संस्मरण, गजल तथा लेख इत्यादि शामिल किया गया है।

मैं हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के सफल प्रकाशन के लिए आपको एक बार पुनः हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि 'नवकिरण' का यह अंक पूरे प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा परिवार के लिए अत्यंत रोचक, संग्रहणीय एवं प्रेरणादायक सिद्ध होगा।


(बंडारू दत्तात्रेय)

नायब सिंह
मुख्यमंत्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़ ।



संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा द्वारा अपनी विभागीय हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' के 43वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

विभाग द्वारा ऐसी पत्रिका का प्रकाशन करके अपने अधिकारियों व कर्मचारियों को कार्यालय कार्यों में राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने हेतु उत्साहित एवं प्रेरित करने के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं ।

एक भाषा के रूप में हिन्दी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है । बहुत ही सरल, सजह भाषा होने के साथ हिन्दी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनियाभर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं । हरियाणा सरकार द्वारा भी विकास योजनाओं एवं नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है ।

मैं पत्रिका के माध्यम से सभी से आग्रह करना चाहूंगा कि बोलचाल की भाषा में भी हिन्दी का ही उपयोग करें । हिन्दी भाषा के प्रचार से समस्त देश में एकता की भावना मजबूत होगी ।

मुझे आशा है कि 'नवकिरण' पत्रिका कर्मचारियों व अधिकारियों को अपने विचार अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें कार्यालय कार्यों में राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के प्रति उत्साहित एवं प्रेरित करेगी ।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ ।

(नायब सिंह)

नाज़ली जे० शाईन

प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), पंजाब
चण्डीगढ़ ।



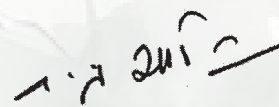
संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपका कार्यालय हिन्दी पत्रिका “नवकिरण” का 43वाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है । राजभाषा के स्वर्णिम और निरंतर विकास में यह एक सफल और सराहनीय प्रयास है ।

आज हिन्दी देश-विदेश की भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करते हुए अपने बदलते स्वरूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख स्थान बना चुकी है । हिन्दी भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र नहीं है, अपितु हमारी संस्कृति का प्रतिबिंब भी है ।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान करने तथा अपनी राजभाषा के लिए गौरवपूर्ण वातावरण तैयार करने में कार्यालयीन पत्रिकाओं का काफी योगदान होता है । आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका “नवकिरण” की दीर्घ यात्रा इस दिशा में अपने महत्वपूर्ण योगदान की परिचायक है ।

“नवकिरण” हिन्दी प्रयोग एवं रचनात्मकता को प्रोत्साहन देने के अपने उद्देश्य को पूर्ण करती हुई अपने पथ पर अग्रसर है । इस पत्रिका के कुशल संपादन व सहयोग हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं । “नवकिरण” पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ ।


(नाज़ली जे० शाईन)

तेग सिंह

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
पंजाब एवं यू.टी., चण्डीगढ़ ।



संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका “नवकिरण” के 43वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है । इस अवसर पर मैं पत्रिका से संबंधित सभी रचनाकारों, पाठकों और संपादक मण्डल को बधाई देता हूँ ।

विभागीय पत्रिकाओं ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक नया मार्ग प्रशस्त किया है । हिंदी पत्रिकाएं विभाग से जुड़े लोगों को अपने विचार प्रकट करने और हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए अवसर प्रदान करती हैं । ये पत्रिकाएं विभिन्न कार्यालयों के मध्य एक सेतु का कार्य करती हैं, जिससे कार्यालयों में होने वाली गतिविधियों की समय-समय पर जानकारी मिलती रहती है । हिंदी न केवल सरकारी काम-काज की भाषा है बल्कि पूरे देश में विचार प्रस्तुत करने का सबसे सशक्त माध्यम है ।

“नवकिरण” पत्रिका के उत्कृष्ट सम्पादन एवं सफल प्रकाशन हेतु मैं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पुनः शुभकामनाएं देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।


(तेग सिंह)

शैलेन्द्र विक्रम सिंह

प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), हरियाणा
चण्डीगढ़ ।



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका “नवकिरण” के 43वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । इस सार्थक प्रयास के लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्य, रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की भांति कार्यालय के कार्य में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के प्रति रुचि एवं उत्साह उत्पन्न करेगा ।

राजभाषा हिंदी के विकास में विभागीय पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । यह कार्मिकों की रचनात्मक व सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने का सशक्त मंच प्रदान करती है । इसके साथ ही वर्ष भर कार्यालय में आयोजित होने वाली विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय कार्यक्रमों से भी अवगत करवाती है ।

हिंदी भाषा में अभिव्यक्ति सहज, सुबोध एवं सरल है । हिंदी हमारी गौरवशाली व वैभवशाली संस्कृति की वाहक है । आज हर क्षेत्र में हिंदी की आवश्यकता महसूस की जा रही है । हिंदी भाषा की उन्नति में ही हमारे देश की उन्नति है । राजभाषा के प्रति पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण रखना हम सबका नैतिक व संवैधानिक दायित्व है ।

पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन तथा स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

शैलेन्द्र विक्रम सिंह
(शैलेन्द्र विक्रम सिंह)

संजीव गोयल, आई.ए.एंड ए.एस.

महानिदेशक लेखापरीक्षा

रक्षा सेवाएं, चण्डीगढ़ ।



संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका “नवकिरण” के 43वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । इस अंक के प्रकाशन हेतु इस संदेश को लिखते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है ।

यह अत्यंत सुखद अनुभूति है कि हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वाहन करते हुए हिंदी को बढ़ावा देने की दिशा में आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका “नवकिरण” का प्रकाशन किया जा रहा है । यह पत्रिका कार्यालय के नवोदित रचनाकारों के लिए उनकी रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करने का मंच तैयार करती है । लेखा परीक्षा विभाग की हिंदी पत्रिका “नवकिरण” राजभाषा के प्रति कर्तव्यनिष्ठ भाव से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ अधिकारियों/कर्मचारियों की रचनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभा रही है । ऐसे ही अभिनव प्रयासों से हिंदी पल्लवित एवं पुष्पित होती है ।

मुझे आशा है कि प्रशासनिक एवं साहित्यिक आभा को समेटे हुए हिंदी पत्रिका “नवकिरण” का यह अंक भी उत्कृष्ट एवं पठनीय सिद्ध होगा ।

(संजीव गोयल)

के.एस. रामूवालिया, आई.ए. एड ए.एस.
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
चण्डीगढ़ ।

संदेश

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका “नवकिरण” के 43वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है । इसकी मुझे हार्दिक प्रसन्नता है । इसके लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं । यह पत्रिका हमें आपके कार्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय क्रियाकलापों से अवगत करवाती रहेगी । साथ ही हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी विशिष्टता को बनाए रखेगी । ऐसा मेरा विश्वास है । राजभाषा हिंदी जनमानस की अभिव्यक्ति का माध्यम है और इसमें अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों को अपने में सम्मिलित करने का भी गौरव है । पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा के प्रति सम्मान का प्रतीक है । इसलिए मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक राजभाषा की प्रगति की दिशा में प्रेरक बनेगा ।



(के.एस. रामूवालिया)

मुख्य संरक्षक की कलम से



नवनीत गुप्ता

विभागीय गृह पत्रिका 'नवकिरण' का 43वाँ अंक पाठकों को समर्पित करते हुए मैं हर्षित हूँ। भारत में विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं तथा इन भाषाओं की विविधता के संवर्धन के साथ सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य हिन्दी भाषा द्वारा बखूबी किया गया है। हिन्दी की भूमिका को हम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज के आधुनिक एवं प्रौद्योगिक विकास में महसूस कर सकते हैं। आज भारत में ही नहीं बल्कि विश्व पटल पर भी हिन्दी अपने अस्तित्व को आकार दे रही है। हिन्दी जनमानस की भाषा है और इसका विकास एवं प्रसार करना हमारा मौलिक दायित्व है। कार्मिकों की रचनाओं की गुणवत्ता, प्रासंगिकता तथा विविधा इसके परिचायक हैं कि कार्यालय के कार्मिक इसको सुदृढ़ करने की अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभा रहे हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका उल्लेखनीय भूमिका निभा रही है। पत्रिका कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रकट करने के लिए सुदृढ़ मंच प्रदान करती है।

'नवकिरण' पत्रिका के 43वें अंक के प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को मैं बधाई व शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूँ, साथ ही मुझे उम्मीद है कि यह पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति करती रहेगी।

(नवनीत गुप्ता)

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), हरियाणा
चण्डीगढ़

संरक्षक की कलम से



वीनस चौधरी

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में निर्बाध गति से अग्रसर कार्यालयीन पत्रिका 'नवकिरण' के 43वें अंक के प्रकाशन पर मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रही हूँ। पत्रिका का सफल प्रकाशन कार्यालय के कर्मिकों की राजभाषा के प्रति कुशल निष्ठा का परिचायक है।

राजभाषा हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता, मेल-मिलाप एवं सहिष्णुता की वाहक है। इसके विकास के साथ हमारा सामाजिक, साहित्यिक एवं राष्ट्रीय विकास जुड़ा हुआ है। कार्यालयीन पत्राचार एवं कार्य-व्यवहार में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है। इस कड़ी में कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी कार्यालयीन पत्रिका 'नवकिरण' में अपनी रचनाएं प्रकाशित कर राजभाषा हिंदी को सशक्त एवं सुदृढ़ करने में योगदान कर रहे हैं।

राजभाषा हिंदी एवं साहित्य के प्रति आप सभी के प्रेम व अनुराग का ही परिणाम है कि 'नवकिरण' पत्रिका प्रगति के नए आयाम स्थापित कर रही है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को बधाई तथा पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वीनस चौधरी

(वीनस चौधरी)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा,
चण्डीगढ़

संपादक की कलम से



डॉ सुधा तिवारी

प्रिय पाठकवृंद

यह वर्ष राजभाषा का हीरक जयंती वर्ष है और नवकिरण का यह 43वां अंक है। यह अवसर प्रसन्नता का है लेकिन साथ ही वैश्विक महामारी, युद्ध तथा विस्थापन से जनजीवन के समक्ष जो नवीन परिस्थितियां उत्पन्न हुई हैं, उसमें यह जरूरी है कि हम ठहर कर सोचें कि जलवायु परिवर्तन एवं बढ़ते तापमान तथा युद्ध एवं विस्थापन ने इंसानी ज़ेहन पर कैसे नकारात्मक प्रभाव डाले हैं और इसका भविष्य में क्या प्रतिफल होगा। तकनीकी के बढ़ते प्रभाव के बीच मानवीय संबंधों को संयोजित कर प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व तथा तादात्म्य स्थापित करना वर्तमान समय में एक अहम जिम्मेदारी है।

कहते हैं बातें केवल जुबान से नहीं होती, बहुधा चुप रहकर भी हम अपने आप को अभिव्यक्त करते हैं। इसका बड़ा माध्यम है साहित्य और सृजन। कार्य-जीवन संतुलन को साधने के लिए प्रबंधन स्तर पर अनेक आयोजन किए जाते हैं पर सबसे रचनात्मक स्थान इसमें पत्रिका को जाता है, जो सृजन के सुख से हमें नवाजती है। विद्वानों ने साहित्य से प्राप्त होने वाले आनंद को ब्रह्मानन्द सहोदर कहा है और इसके साथ आपका सहज संबंध स्थापित करने के लिए 'नवकिरण' प्रतिबद्ध है। पत्रिका का यह अंक विभिन्न विषयों पर आलेख एवं कविताओं से सुसज्जित है, जिसमें मुख्यतः संस्मरण आधारित लेख तथा यात्रा वृत्तांत सम्मिलित हैं। यह आलेख रचनाकारों के साथ-साथ पाठकों के मन की गहन वीथियों को उद्घाटित करने में सक्षम होंगे, ऐसी आशा है।

मुझे पूरा विश्वास है कि बदलते युग की बदलती परिस्थितियों में हमारी पत्रिका हम सब के जीवन में नवकिरण का संचार करेगी। सभी रचनाकारों एवं पाठकों का 'नवकिरण' के इस 43वें अंक में हार्दिक स्वागत है।

राजभाषा के हीरक जयंती वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

जय हिन्द।

(डॉ सुधा तिवारी)

हिन्दी अधिकारी

भारत एक बहुभाषिक संस्कृति और राजभाषा हिन्दी



डॉ सुधा तिवारी
हिन्दी अधिकारी

हमारा देश राजनीतिक सीमाओं से कम और यात्राओं से अधिक निर्धारित हुआ है। भारत की संस्कृति, भाषा एवं साहित्य में भी इन यात्राओं का प्रभाव साफ परिलक्षित होता है। खड़ी बोली हिन्दी आदिकाल से ही संतों-महात्माओं, व्यापारियों, तीर्थयात्रियों एवं सैनिकों की भाषा रही और उनके घुमंतू जीवन के कारण भाषा भी इनके साथ-साथ बहती रही और पूरे भारत में व्याप्त हो गई। भाषाओं का स्वरूप भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिस्थितियों के साथ परिवर्तित एवं परिवर्धित होता रहता है और इस मामले में हमारा देश काफी समृद्ध है।

भाषा परिवार

वर्तमान समय में पूरे विश्व में 6,900 से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं। ये भाषाएं प्रमुखतः 9 भाषा-परिवारों से सम्बद्ध हैं। भाषा परिवार किसी एक समान स्रोत अर्थात् प्राग भाषा (आदि भाषा) से निकलने वाली भाषाओं का समूह है चाहे वह प्राग भाषा अभी अस्तित्व में न हो। इन भाषा परिवारों को भी आगे कुछ समूहों में वर्गीकृत किया जाता है। विश्व में बोली जाने वाली इन भाषाओं-बोलियों से संबंधित 9 प्रमुख भाषा परिवार निम्नलिखित हैं -

1. भारोपीय भाषा परिवार
2. सामी-हामी भाषा परिवार
3. द्रविड़ भाषाएँ
4. ऑस्ट्रीक भाषा परिवार
5. फिनो-उग्रीक भाषा परिवार

6. अल्ताई
7. चीनी-तिब्बती
8. काकेशियन
9. अमेरिकी भाषाएँ

सम्पूर्ण दक्षिण एशिया में बोली जाने वाली भाषाएं प्रमुखतः चार भाषा परिवारों से सम्बद्ध हैं:- भारोपीय, द्रविड़, ऑस्ट्रो-एशियाई एवं चीनी-तिब्बती भाषा परिवार।

भारोपीय भाषा परिवार में संसार की लगभग सभी प्रमुख भाषाएं सामाहित हैं, जिनमें प्रमुखतः अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पैनिश, फारसी, हिन्दी, उर्दू, बांग्ला, पंजाबी, हैं। हमारी मातृ-भाषाओं का लगभग एक-तिहाई हिस्सा (574 भाषाएं) भारोपीय भाषा परिवार से संबद्ध है। इसमें कुल मिलाकर 73 प्रतिशत भारतीय जनसंख्या समाहित हो जाती है। द्रविड़ भाषा परिवार देश का दूसरा प्रमुख भाषा समूह है, इसमें 153 भाषाएँ सम्मिलित हैं।

1961 की जनगणना के अनुसार भारत में 1652 भाषाएं बोली जाती हैं। भारत एक ऐसा देश है जहां हर 200 कि० मी० पर भाषा और संस्कृति बदल जाती है।

कोस कोस पर बदले पानी और चार कोस पर बानी।

हिन्दी भाषा का विकास एवं इसके संस्थानिक प्रयास

एक बहुभाषी देश में किसी एक भाषा के केन्द्र में आने के पीछे कई कारण होते हैं। जब कोई भाषा

किसी राष्ट्र के केन्द्रीय हितों का वहन करने तथा उसकी अभिव्यक्ति में सक्षम हो जाती है एवं उसे राजनीतिक तौर पर सत्ता का प्रयास एवं प्रोत्साहन भी प्राप्त हो अथवा वह रोजगार एवं व्यापारिक हितों को साधने का माध्यम बन जाए तो उस भाषा का राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार निर्धारित होता है। ईसा की 1000 सदी के आस-पास आरंभ हुई हिन्दी भाषा अपने विशाल बोली-क्षेत्रों के साथ आज लगभग 17 बोलियों के साथ अपने वर्तमान गरिमामय एवं सामासिक स्वरूप में पल्लवित हो रही है।

हिन्दी के विकास में उन्नीसवीं (19वीं) सदी का विशेष महत्व है। इस समय तक आम जन-जीवन के माध्यम से औचक बहती भाषा को एक संस्थानिक रूप देने का प्रयास शुरू हुआ। इसके विकास के लिए कई सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएं स्थापित हुईं, जिनमें सबसे प्रमुख नाम है फोर्ट विलियम कॉलेज का। इसके साथ-साथ टेक्स्ट बुक सोसायटी, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा, हिन्दी विद्यापीठ बम्बई, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् बैंगलोर आदि। इसके साथ ही ब्रह्मसमाज, आर्य समाज, सनातन धर्म सभा, प्रार्थना सभा, थियोसॉफिकल सोसायटी, रामकृष्ण मिशन, राधास्वामी संप्रदाय आदि संस्थाओं की भी हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

महात्मा गांधी का स्पष्ट मानना था कि हिन्दी को ही भारत की राष्ट्रभाषा बनने का गौरव मिलना चाहिए। गांधी जी ने 1918 ई० में इंदौर के आठवें हिन्दी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर बल दिया था। इसी सम्मेलन में उन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यकर्ताओं को दक्षिण भारत में जाने के लिए प्रेरित किया तथा उन्होंने अपने पुत्र देवदास

गांधी को भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए भेजा था।

दक्षिण भारत के हर राज्य में हिन्दी के प्रसार-प्रचार के उद्देश्य से महात्मा गांधी ने सन् 1918 ई० में मद्रास में 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' की स्थापना की थी। महात्मा गांधी के पुत्र देवदास गांधी इस संस्थान के पहले प्रचारक थे। इस सभा के द्वारा हिन्दी भाषा को दक्षिण से जोड़ने का यह पहला कदम था। मद्रास स्थित दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के मुख्यालय के अंतर्गत अनेक शाखाएँ-उपशाखाएँ हिन्दी के प्रचार-प्रसार का कार्य करती हैं। इसी सभा के योगदान से आज दक्षिण भारत के लोग हिन्दी पढ़ने-लिखने और साहित्य सृजन में संलग्न हैं। हिन्दी के विकास में दक्षिण भारत के राज्यों के अनेक साहित्य प्रेमियों ने योगदान दिया है। उनमें प्रमुख सी० पी० रामास्वामी अय्यर, टी० आर० वेंकटराम शास्त्री, एन० सुंदर अय्यर आदि हैं।

वर्तमान समय में हमारे देश में 1600 से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं, जिनमें से प्रमुख रूप से बोली जाने वाली 22 भाषाओं को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। आज हम जिस हिन्दी का प्रयोग करते हैं वह एक विशाल जनसमूह द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं एवं बोलियों का प्रतिनिधित्व करती है। इन बोलियों को अध्ययन की दृष्टि से पाँच भागों में बाँटा गया है -

(1) पूर्वी (2) पश्चिमी (3) राजस्थानी (5) बिहारी और (5) पहाड़ी हिन्दी।

पूर्वी हिन्दी : इसमें प्रमुख बोलियाँ हैं : अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी। अवधी भाषा में तुलसीकृत, रामचरितमानस एवं पदमावत प्रमुख रचनाएँ हैं।

पश्चिमी हिन्दी : इसमें प्रमुख बोलियाँ हैं ब्रजभाषा, खड़ीबोली, हरियाणवी, बुंदेली और कन्नौजी। ब्रजभाषा में सूरदास और नन्ददास की कृष्णभक्ति से सराबोर

उत्कृष्ट काव्य रचनाएँ हैं। खड़ीबोली विशेषकर दिल्ली, मेरठ, गाजियाबाद, बिजनौर और सहारनपुर तथा इसके आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है।

राजस्थानी हिन्दी : राजस्थान प्रदेश में प्रयुक्त बोलियों के समूह को राजस्थानी हिन्दी कहते हैं। इसमें प्रमुख हैं- मारवाड़ी, मेवाड़ी, मेवाती, हाड़ोती आदि।

बिहारी हिन्दी : बिहार तथा झारखंड प्रदेशों में बोली जाने वाली बोलियों के समूह को बिहारी हिन्दी कहते हैं।

इनमें प्रमुख हैं - मगही, भोजपुरी और मैथिली। मैथिली के आदि कवि 'विद्यापति' की प्रसिद्ध 'पदावली' मैथिली में ही है। अंगिका और बज्जिका बोलियाँ इसी हिन्दी के अंतर्गत आती हैं।

पहाड़ी हिन्दी : हिमाचल में बोली जाने वाली बोली (मंडियाली), गढ़वाल की बोली (गढ़वाली) और कुमाऊँ की बोली (कुमाऊँनी), पहाड़ी हिन्दी कहलाती है।



तीज पर्व के समारोह में महिला सदस्य



तीमारदार



आशीष

सहायक लेखा अधिकारी

कालू राम एक साधारण कर्मचारी था, उसके जीवन में ज्यादा कुछ नहीं था। रोज सुबह ऑफिस के लिए तैयार होना, समय से ऑफिस जाना, शाम को समय से घर आना, किसी प्रकार की बुरी लत नहीं और न ही ज्यादा ऊंचे ख्वाब। कालू राम का घर का खर्च भी सीमित था। बच्चे सरकारी स्कूल में पढ़ते थे तो पैसे लगना तो दूर की बात, मिल और जाते थे। पत्नी भी साधारण स्वभाव की थी ज्यादातर मायके से मिले कपड़े ही काफी होते थे। ब्यूटी पार्लर जाने की कभी झूठ मूठ भी कहती तो कालू राम उससे कहता “तुम तो वैसे ही इतनी सुंदर हो, तुम्हें क्या जरूरत है पार्लर जाने की अपनी नेचुरल ब्यूटी को पार्लर के मेकअप से मत खराब करो” इन्ता सुनते ही बीवी फूले नहीं समाती थी और कालू राम का खर्च बच जाता था।

उसके घर में एक चीज का विशेष ध्यान रखा जाता था। वो दिन भर में जिस भी चीज पर जितना खर्च करते उस चीज का हिसाब एक डायरी में मेंटेन किया जाता था जैसे सब्जी पर कितना खर्च किया, दूध पर कितना खर्च किया, बीमारी पर कितना खर्च किया या गाड़ी के तेल में कितना खर्च किया यह सभी बातें डायरी में डाटा शीट बनाकर मेंटेन की जाती थी। यह काम रोजाना रात हर हाल में किया जाता था, चाहे कुछ भी हो जाए पर ये चीज वो कभी मिस नहीं करते थे। वह हर महीने के अंत में हिसाब करते थे कि किस चीज पर कितना खर्च हुआ तथा अगले महीने में इस खर्च को कम करने के लिए प्रयास करते थे।

जिंदगी यूं ही समानांतर चली जा रही थी फिर एक दिन सुबह के 4:00 बजे अचानक उसकी पीठ में

भयंकर दर्द शुरू हुआ। दर्द इतना भयंकर था कि वह उठ कर बैठ भी नहीं पा रहा था। जैसे ही वह खड़ा होने की कोशिश करता गिर जाता। वह बुरी तरह घबरा गया कि यह क्या हो गया परंतु दर्द था कि कम होने का नाम ही नहीं ले रहा था। वह किसी तरह हॉस्पिटल गया वहां पर उसका एक्सरे हुआ तथा दवाई देकर उसको घर भेज दिया गया।

जब 5 दिन की दवाई खाने के बाद भी हल नहीं निकला तो वह दोबारा हॉस्पिटल गया और उसकी चिंता और बढ़ चुकी थी क्योंकि दर्द विकराल रूप ले चुका था, इस बार डॉक्टर ने MRI करने के लिए लिख दिया। मरीज की रिपोर्ट में पता चला कि गर्दन की कोई नस ब्लॉक हो गई है जिसके कारण यह भयंकर दर्द हो रहा है। डॉक्टर ने यहां तक चेतावनी दे दी थी कि अगर इसका ऑपरेशन नहीं होगा तो सीधा हाथ बिल्कुल कमजोर पड़ जाएगा तथा भविष्य में इससे कोई काम नहीं कर पाओगे।

पूरे घर में मातम का माहौल था, धीरे-धीरे बात सभी रिश्तेदारों को पता चल गई। शाम को रोज ऑफिस के साथी हाल-चाल पूछने आ जाते थे। अब जब लोग हाल-चाल पूछने आते तो चाय पानी तो बनता ही था। दिन में दूध और बिस्किट नमकीन का खर्चा पहले से 3 गुना तक बढ़ गया था।

फिर दूर-दूर से रिश्तेदारों का आवगमन शुरू हो गया, चूंकी चंडीगढ़ शहर सबके लिए नया था तो किसी को भी आगे रास्तों का तो पता नहीं था। जो भी रिश्तेदार आता स्टेशन से ही फोन कर देता हमको लेने आ जाओ।

कालूराम का बेटा किसी तरह गाड़ी चलाकर स्टेशन तक पहुंचता और रिश्तेदारों को उसमें लाद कर घर तक ले आता। डर भी लगता था उसको क्योंकि उसका भी सिर्फ लर्नर लाइसेंस ही था, पक्का लाइसेंस अभी बना नहीं था। घर आते ही सबसे पहले सभी रिश्तेदारों का चाय नाश्ता तैयार होता क्योंकि उनकी नजर में मैं एक सरकारी कर्मचारी था, और लोगों के अंदर यह वहम होता है कि सरकारी कर्मचारी की आय बहुत ज्यादा होती है तो उनकी खातिरदारी में कोई कमी भी नहीं छोड़ सकता था। चाय नाश्ता करके रिश्तेदार थोड़ा-थोड़ा हाल-चाल पूछते, कैसा दर्द है ? यह सब कैसे हो गया ? बस यही सब की मिली जुली बातें होती थी। कई बार तो कालूराम को वही रटी रटायी बातों, की कैसे यह सब हुआ, दिन में 10 लोगों को अलग-अलग बोलना था जिस कारण वह खुद भी डिस्टर्ब होने लग गया था।

हमारे देश में एक बड़ी बात है कि यहां पर हर कोई, किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त है तथा हर इंसान के पास दूसरे को बीमार करने के 10 नुस्खे तैयार रहते हैं। सभी रिश्तेदार अपनी-अपनी राय देते हैं कोई देसी इलाज की कहता, कोई फिजियोथैरेपी की कहता, कोई इंग्लिश दवाई की कहता, कोई एक्सरसाइज करने की सलाह देता, तो कोई चुपचाप आराम करने की सलाह देता। पर वो बेचारा सब की बातें सुनता और दर्द से कराहता रहता।

रिश्तेदार थोड़ी देर अपनी सांत्वना देने के बाद बाहर बैठ जाते हैं, कुछ पार्क में चले जाते हैं फिर उनकी वही बातें शुरू हो जाती हैं। अपने रिश्तेदारी की बातें आम जिंदगी की बातें, एक-दूसरे की चुगली करना एक दूसरे को नीचा दिखाना, अपनी तारीफ करना दूसरों में कमियां निकालना। यही तो होता है जब चार रिश्तेदार इकट्ठे हो जाते हैं।

अगले दिन कुछ रिश्तेदार जब बैठे-बैठे ऊब

जाते हैं तो आपस में विचार करने लगे, चंडीगढ़ आए हैं तो चलो क्यों ना रॉक गार्डन सुखना लेक घूम ही आते हैं। रिश्तेदारों का यह मन देखकर कालूराम की पत्नी बोली इनको आज PGI दिखाने ले जाना है, बेटे के साथ ही चले जाओ, दिखाने के बाद वहीं से चले जाना।

पी०जी०आई० में काफी भीड़ होती है। वहां पर दो-तीन घंटे बैठने के बाद रिश्तेदारों बोर होने लगे तो उन्होंने बेटे से कहा बेटा लगता है आज शाम यहीं हो जाएगी, तुम ऐसा करो, पापा को दिखाओ हम जरा घूम के आते हैं फोन कर देना हम जल्दी ही आ जाएंगे।

संयोग देखिये अचानक वहां एक डॉक्टर की जगह तीन डॉक्टर बैठ गए और जहां शाम होने वाली थी वह काम घंटे में ही हो गया। मगर रिश्तेदार तो दोनों जा चुके थे, बच्चा छोटा था, वो अकेला था उसमें इतनी ताकत भी नहीं थी कि पिता को स्ट्रेचर पर लिटाकर अकेले खींच सके। मरता क्या नहीं करता, किसी तरह लोगों की मदद से वह स्ट्रेचर खींचकर बाहर तक लाया और टैक्सी करके घर आया। जैसे ही वह घर पहुँचा, रिश्तेदारों का फोन आया, अरे बेटा ! हम तुम्हें पी०जी०आई० में ढूँढ रहे हैं। तुम कहां रह गए ? बेटा झुंझलाते हुए बोला अंकल आप घर आ जाओ, मैं घर आ गया हूँ।

पर बेटा हमें तो रास्ता नहीं मालूम तुम लेने आ जाओ। मरता क्या ना करता है, बेचारा गाड़ी उठाकर फिर उन की तरफ चल पड़ा, मन ही मन सोच रहा था कि पिता जी को ले जाने के लिए मैं कभी नहीं उठता और उनको लाने के लिए मुझे गाड़ी चलानी पड़ रही है। डर भी रहा था क्योंकि उसके पास पक्का लाइसेंस भी नहीं था। किसी तरह रिश्तेदारों को घर तक लेकर पहुंचा।

रात को खाना बनता तो सबकी अलग-अलग पसंद होती, किसी को यह सब्जी नहीं खानी किसी को

वह सब्जी नहीं खानी । बच्चों के अलग नखरे थे, कालूराम की पत्नी की वैसे ही कम मुसीबत थी थोड़ी और बढ़ गई एक तरफ पति बीमार दूसरी तरफ रिश्तेदारों का झुंड । पर किसी को कुछ कहा भी नहीं जा सकता था। क्योंकि वह भी बहुत दूर से देखने आए थे तो इतना तो हक बनता है उनका । दो-तीन दिन रहने के बाद रिश्तेदारों का निर्णय हुआ चलो बेटा अब चलते हैं उम्मीद है कि तुम अब जल्दी ठीक हो जाओगे । बेटे को फिर उन्हें स्टेशन छोड़ने जाना पड़ा । कालू बेशक बीमार था मगर शाम को खर्च की डायरी मेंटेन करना कभी नहीं भूलता था दिन भर में जिस चीज पर जितना खर्च होता वह सारा दर्ज करता था । एक हफ्ते बाद पत्नी के मायके से उसके चाचा, मां, और भाई भी कालू को देखने घर आ गए।

ससुराल वाले काफी पैसे वाले थे तो वह अपनी गाड़ी करके आए थे । हाल-चाल पूछने के बाद उनका भी वही हाल था जो पहले वाले रिश्तेदारों के थे । उन्होंने अपनी-अपनी राय दी । ऐसे ही इलाज करो, यह चीज खाना, वह चीज खा लो । चाचा जी तो अपने साथ थोड़ी सी अपनी भी लेकर आए थे कह रहे थे कि इससे नसों की ब्लॉकज खुल जाएगी ।

ससुराल वालों की अच्छी बात रही कि सुबह आए और शाम को जाने के लिए तैयार हो गए । परंतु सास ने सोचा अब इतने दिनों बाद बेटा के घर आई हूँ तो एक महीना रह लेती हूँ । वैसे कहां रोज जाना होता है

मां के आ जाने से पत्नी के चेहरे पर एक अलग ही मुस्कान थी । इतने दिनों का तनाव झेलने के बाद पहली बार उसको कालू खुश देख रहा था, पर वो और अकेला पड़ गया ।

पत्नी कालू को दवाई, खाना पीना देकर अपनी मां के पास दूसरे कमरे में बैठी रहती । बैठना भी चाहिए

था क्योंकि उसकी मां केवल उसके भरोसे ही तो यहां पर आई थी । 2 साल के बाद अपनी मां से मिल रही थी तो वह चाहती थी कि ज्यादा से ज्यादा वक्त अपनी मां के साथ बिता सके । किन्तु कालूराम का दर्द और उसके साथ उसका अकेलापन दोनों ही उसको और परेशान करने लगे थे । धीरे-धीरे वक्त गुजरता गया दर्द में कुछ कमी आई काफी इलाज के बाद शरीर को कुछ आराम मिलने लगा । शायद इन्सान का शरीर एक वक्त के बाद खुद को अपने आप ही ठीक करने लगता है ।

धीरे-धीरे उसने ऑफिस जाना शुरू किया वहां जाकर वह कम से कम मानसिक तौर पर ठीक रहता था। काम के कारण उसका ध्यान दर्द से थोड़ा हट जाता था । धीरे-धीरे जीवन पटरी पर आने लगा ।

महीने के अंत में जब उसने पूरे महीने के कुल खर्च का हिसाब लगाया तो पता चला कि उसके इलाज से ज्यादा खर्चा महमानों के आवागमन व खातिरदारी में खर्च हो गया । इलाज का कुछ खर्च तो ऑफिस से वापस भी मिल जाता पर इसके बारे में क्या करें । वह मन ही मन सोच रहा था कि आगे से कुछ भी हो जाये किसी रिश्तेदार को जब तक बहुत जरूरी न हो, तब तक किसी बीमारी के बारे में खबर नहीं होने दूंगा ।



एक रोचक यात्रा



रमेश कुमार शर्मा
सहायक पर्यवेक्षक

मुझे शुरू से ही लम्बी यात्राओं पर भ्रमण करने का शौक रहा है, बात मार्च 2018 की है मैंने अपनी धर्मपत्नी से गुवाहटी चेरापूँजी (आसाम), शिलोंग (मेघालय), गैंगटोक, नामची (सिक्किम), दार्जिलिंग (पश्चिमी बंगाल) आदि गृह नगर यात्रा भत्ता के अंतर्गत घूमने का जिक्र किया, कुछ आनाकानी के बाद उसने अपनी सहमती तो दे दी, साथ ही उसने इस यात्रा के विषय में अपनी सहेलियों के आगे जिक्र भी कर दिया, जिनके पति मेरे सहयोगी ही थे। पहले तो केवल मेरा परिवार ही इस यात्रा पर जा रहा था लेकिन एक दो दिन में मेरे दो पड़ोसी व दो और अन्य सहयोगियों ने भी इस यात्रा में अपने परिवार सहित जाने की उत्तुक्ता दिखाई। कुल मिलाकर 18 सदस्य तैयार हो गए इस अद्भुत यात्रा पर जाने को। मार्च 2018 में गुवाहटी में श्री एस०एस० दुधवाल वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) के तौर पर कार्यरत थे जो इससे पहले हमारे कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा में वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के तौर पर कार्य कर चुके थे, उनके साथ मेरे अच्छे सम्बन्ध रहे हैं। जो आज भी कायम हैं, सबसे पहले उनको मैंने कार्यालय के अतिथि गृह में पांच कमरे पांच दिन (31.03.2018 से 03.04.2018) तक बुक करवाने हेतु अनुरोध किया, भाग्यवश इस अवधि में कमरे खाली थे, उन्होंने हमारा अनुरोध स्वीकार कर लिया और पांच कमरे हमारे लिए बुक करवा दिए। इसके बाद मैंने 04.04.2018 एवं 05.04.2018 हेतु गंगटोक में, 06.04.2018 एवं 07.04.2018 हेतु दार्जिलिंग में होटल एवं 08.04.2018 हेतु सिलीगुड़ी के

इस्कोन मंदिर में कमरे बुक करवा दिए। साथ ही मैंने भविष्य निधि में से 1 लाख के करीब अग्रिम व यात्रा भत्ता अग्रिम हेतु फॉर्म भर दिए, अग्रिम मिलते ही मैंने कमरों की बुकिंग के बाद सबके लिए हवाई यात्रा की टिकटें, गुवाहटी, चेरापूँजी/शिलोंग (मेघालय) हेतु टेम्पो ट्रेवलर एवं सब स्थानों के लिए टेक्सी की बुकिंग करवा दी, इस प्रोसेस में मैंने दिन रात एक कर दिया, पूरी यात्रा की योजना में मुझे 4-5 दिन का समय लग गया। हमारे इस ग्रुप में दो वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी, एक सहायक परीक्षा अधिकारी पी०ए०जी० (ऑडिट) पंजाब के परिवार एवं एक मेरा परिवार व एक मेरे सहयोगी का परिवार शामिल था, कुल 18 सदस्य थे। हमारी चंडीगढ़ एयरपोर्ट से गुवाहटी के लिए 31.03.2018 दोपहर 2 बजे की लिंक फ्लाइट थी, हमने 2-2.30 घंटे पहले एयरपोर्ट पहुँच कर सभी औपचारिकताएँ पूरी की और विमान में सवार हो गए, हमारा विमान दोपहर 3 बजे दिल्ली एयरपोर्ट पहुँच गया, 3-4 घंटे एयरपोर्ट पर कैसे गुजरे पता ही नहीं चला, करीब 7 बजे दिल्ली से विमान ने उड़ान भरी और रात्रि 9.30 बजे हम गुवाहटी एयरपोर्ट पर पहुँचे, सब अपना-अपना सामान लेकर एयरपोर्ट से बाहर आए, हमने टेम्पो ट्रेवलर पहले से ही बुक कर रखी थी सभी उसमें सवार होकर सीधे हम ए० जी० ऑफिस के अतिथि गृह में रात्रि करीब 11 बजे पहुँचे, सभी ने अपना अपना सामान कमरों में रखा तथा सभी फ्रेश होकर आए, तब तक भोजन तैयार हो चुका था, सभी ने भोजन ग्रहण किया जो कि बहुत ही लाजवाब बना था। दुधवाल साहब ने दो अटेंडेंट (जो पति पत्नि थे) हमारी आवभगत के

लिए नियुक्त किए थे, जब तक हम रहे तब तक सुबह की चाय, नास्ता, दोपहर व रात का भोजन हमारी उम्मीद से बेहतर बनाते थे। हम भोजन ग्रहण करके विश्राम हेतु अपने अपने कमरों में चले गए, सभी कमरे वातानुकूलित थे, बिस्तर में जैसे ही गए नींद ऐसी आई कि, एक अप्रैल, 2018 सुबह 5 बजे आँख खुली, आँख खुलते ही चाय मिल गई, सभी नहा धो कर तैयार हुए तो नास्ता तैयार था और हमारी टेम्पो ट्रेवलर आ चुकी थी, सभी अपनी अपनी सीटों पर बैठे और हमारी बस सिद्ध पीठ माँ कामख्या मंदिर के लिए रवाना हो गई, करीब 40 मिनट बाद सुबह 8.30 बजे हम माँ कामख्या मंदिर के प्रांगन में पहुँच गए। मंदिर में इतनी भीड़ देखकर सब चकित रह गए ऐसे लग रहा था जैसा पूरा हिंदुस्तान ही माँ के दर्शन के लिए उमड़ पड़ा हो। पूछने पर मालूम हुआ कि सामान्य लाइन में लगकर दर्शन करने में तीन दिन का समय लग जाएगा। एक सुरक्षा कर्मचारी ने अपनी राय व्यक्त की, कि अगर आप चाहते हैं कि दर्शन जल्दी हों, तो एक रास्ता है कि आप 501 रुपये प्रत्येक हेतु मंदिर ट्रस्ट की टिकट ले लें तो वी०आई०पी० लाइन में लगकर तकरीबन 3 घंटे में फ्री हो सकते हैं, यह सुनकर सभी ने सुकून की सांस ली और टिकट लेकर सब वी०आई०पी० लाइन में लग गए, फिर भी दर्शन करने में हमें तकरीबन 8 घंटे का समय लग गया। सायं के 4 बज चुके थे, सबने हल्का फुल्का जिसको जो अच्छा लगा खा पीकर बस में सवार हो गए, हमारी बस ब्रह्मपुत्र नदी में चलने वाले क्रूज की सैर करवाने हेतु निकल पड़ी। क्रूज की टिकट 350 रुपये प्रत्येक व्यक्ति की थी, हमने टिकट लीं और क्रूज में सवार हो गए, कुछ ही पलों में क्रूज रवाना हो गया, ब्रह्मपुत्र नदी में चलने वाले क्रूज की सवारी का अलग ही अनुभव था, इसमें ऑर्केस्ट्रा की भी व्यवस्था थी, सब ने संगीत का आनंद लिया और ब्रह्मपुत्र नदी के मनोरम दृश्यों का अवलोकन कर मन भाव विभोर हो गया, करीब डेढ़ घंटे की यात्रा के बाद क्रूज वापिस आया

और हम पुनः बस में सवार हो गए रास्ते में कुछ समय गुवाहटी के बाजार में बिताने के बाद हम करीब 8.30 बजे अतिथि गृह में पहुँच गए, सभी जब तक फ्रेस हुए रात का भोजन तैयार हो चुका था, सबने भोजन ग्रहण किया और रात्रि 10 बजे तक सभी सो गए, क्योंकि सुबह 4 बजे उठकर हमें चरापूँजी/शिलोंग की यात्रा पर जाना था। 02 अप्रैल 2018 को सभी सुबह 03 बजे विस्तर छोड़ चुके थे, उत्सुकतावश सभी जल्दी-जल्दी तैयार हो गए, हमारी बस पहुँच चुकी थी, सभी नाश्ता करके सुबह 5.30 बजे बस में अपनी अपनी सीटों पर बैठ चुके थे, कुछ ही पलों में बस रवाना हो गई, हम रास्ते के नजारे लेते हुए शिलोंग होते हुए करीब 10.30 बजे चरापूँजी पहुँच गए, बस एक स्थान पर रूकी, जहाँ से हमने पैदल ही भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे ऊँचे झरने, नोहकलिकाई जो चरापूँजी में स्थित है तक जाना था, सभी बस से उतरे और चल पड़े अपने गंतव्य की ओर, रास्ते में लगे स्टालों का अवलोकन करते हुए करीब 1-1.30 घंटे में हम नोहकलिकाई झरने के पास पहुँच गए, रास्ते में बहुत अधिक गर्मी थी, जैसा हमने किताबों में पढ़ा था कि चरापूँजी में पूरा साल बारिश होती रहती है, ऐसा हमें कुछ भी नहीं लगा, वहाँ का तापमान बहुत अधिक था, हम सबका गर्मी की वजह से बहुत बुरा हाल था, वहाँ से कुछ ही दूरी पर बांग्लादेश का बॉर्डर था, करीब आधे घंटे में हम वहाँ भी गए और उस विहंगम व अलौकिक दृश्य का अवलोकन किया और सायं करीब 4 बजे हम वापिस अपनी बस के पास पहुँच गए। हमने जलपान आदि ग्रहण किया और बस में सवार हो गए, चरापूँजी से हमने दालचीनी बहुत मात्रा में खरीदी जो कि कोडियों के भाव मिल रही थी क्योंकि दालचीनी के पेड़ वहाँ बहुतायत मात्रा में हैं। वहाँ से हमारी बस शिलोंग के लिए निकल पड़ी, रास्ते में ट्रैफिक जाम की वजह से हमारी बस रास्ते में कुछ देर रूकी तो साथ में एक आर्मी का ट्रक खड़ा था, उसमें से कुछ फौजी नीचे उतरे, एक फौजी ने मेरे बेटे

को आवाज लगाई ओये मनु तू यहाँ कैसे, मेरा बेटा बहुत हैरान हुआ, दोनों खूब गर्मजोशी से गले मिले और उसने हमारा परिचय उस फौजी से करवाया, वो उसका सहपाठी रहा था और वह अपनी यूनिट के साथ बांग्लादेश बॉर्डर पर जा रहा था, दुनिया गोल है कोई कहीं भी किसी को मिल सकता है । कुछ समय बाद हमारी बस वहाँ से रवाना हो गई व करीब 7 बजे शिलोंग पहुँच गई, बस एक स्थान पर रूकी, हम बाजार में घूमने के लिए निकल पड़े रात्रि में शिलोंग के बाजारों का नजारा देखते ही बनता था, शिलोंग बहुत ही सुन्दर लग रहा था, करीब 2 घंटे बाजार से कुछ खरीददारी करके सब बस में सवार हो गए और बस गुवाहटी के लिए रवाना हो गई । रात्रि के 11 बजे हमारी बस अतिथि गृह में प्रवेश कर गई, सब बस से उतरे, जब तक फ्रेस हुए भोजन तैयार था, भोजन ग्रहण किया और सब सो गए । 03.04.2018 को हम सब देर तक सोये, सुबह करीब 10 बजे हम उठे और जब तक हम तैयार हुए तब तक नास्ता बन चुका था, सबने नास्ता ग्रहण किया और करीब 11.30 बजे बस में सवार हो गए, हमने वहाँ का इस्कोन मंदिर, नवग्रह मंदिर व गुवाहटी के एक दो बाजारों का अवलोकन किया और रात्रि 8.30 बजे अतिथि गृह पहुँच गए, जब तक सब फ्रेस हुए रात का भोजन तैयार हो चुका था, सबने भोजन किया और बिस्तर पकड़ लिया, रात्रि 10 बजे तक सब सो गए । हम सब 04.04.2018 को सुबह जल्दी ही उठ गए, जब तक सब तैयार हुए, सुबह का नास्ता तैयार हो चुका था, सबने नास्ता किया और अटेंडेंट (जो पति पत्नी थे) को अपनी खुशी से सबने कुछ न कुछ भेंट दी और सुबह करीब 11 बजे गुवाहटी एअरपोर्ट के लिए रवाना हो गए, दोपहर करीब 12.30 बजे हम गुवाहटी एयरपोर्ट पहुँच गए, दोपहर 2.30 बजे हमारी बागडोगरा के लिए फ्लाइट

थी, हम सबने अपनी सभी औपचारिकताएं पूरी की और विमान में स्वार हो गए, सांय करीब दोपहर 3.40 बजे हमारा विमान बागडोगरा एअरपोर्ट पहुँचा, हमने अपना सामान लिया और टेक्सी जो पहले से बुक कर रखी थी उनमें सवार हुए और सांय 4.30 बजे हम गैंगटोक के लिए रवाना हो गए, रात्रि 9 बजे हम गैंगटोक टेमी रेजीडेंसी होटल में पहुँच गए, होटल स्टाफ को पहले से हमने बोल रखा था कि हम रात्रि 9 बजे के आसपास पहुँचेंगे, इसलिए उन्होंने हमारे लिए रात्रि का भोजन तैयार कर रखा था, सभी ने सामान अपने कमरों में रखा, जब तक सानादि किया भोजन टेबल्स पर लग चुका था, सबने भोजन ग्रहण किया और सो गए, बिस्तर पर लेटे ही थे कि दिनभर की थका देने वाली यात्रा के कारण तुरंत नींद आ गई 05.04.2018 सुबह जल्दी उठे स्नान आदि किया तब तक नास्ता तैयार हो चुका था, हमने नास्ता किया और तब तक पहले से बुक 5 टैक्सी होटल के बाहर आ चुकी थी, हम टेक्सी में सवार हुए और गैंगटोक के प्रमुख स्थानों के अवलोकन हेतु चल पड़े, केवल कार से गैंगटोक के विहंगम दृश्यों का आनंद लिया, वहाँ के प्रमुख फ्लावर गार्डेंस की सैर की, व प्रमुख बाजारों में घूमने के बाद रात्रि 8 बजे के करीब होटल पहुँच गए, जब तक हम फ्रेस होकर आए, रात्रि का भोजन टेबल्स पर लगा चुका था, सबने भोजन ग्रहण किया और जल्दी सो गए क्योंकि सुबह हमने नामची के लिए प्रस्थान करना था, जहाँ चार धाम व बारह ज्योतिर्लिंगों के स्वरूप ज्यों के त्यों विराजमान हैं ।

नोट : इससे आगे की यात्रा के लिए आपको अगले अंक का इंतजार करना पड़ेगा ।

गुलाबी नगरी : जयपुर



किरन मीना

‘पधारो म्हारे देश’, राम राम सा, खम्मा घणी, ये नाम सुनकर एक ही नाम जेहन में आता है, राजस्थान, रंगीलो राजस्थान’ ।

राजस्थान प्रसिद्ध है अपनी रंग बिरंगी संस्कृति और गौरवशाली इतिहास के लिए, जिसका बहुत ही अच्छा उदाहरण है जयपुर । राजस्थान की राजधानी जयपुर जिसे गुलाबी नगरी भी कहते हैं । यहाँ शहर का पूरा परकोटा और चारदीवारी में सभी मकान और दुकानें गुलाबी रंग से रंगी हुई हैं । इसलिए जयपुर को गुलाबी नगरी कहते हैं ।

जितना खूबसूरत इस शहर का नाम है, उतनी ही खूबसूरत ये शहर और यहां की संस्कृति है, जो अपनी संस्कृति और विरासत के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है । जयपुर का इतिहास ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण रहा है, इसमें राजा, महाराजा, किले दुर्ग, परकोटे अपनी अलग ही पहचान रखते हैं । यहाँ के प्रसिद्ध स्थल हैं, हवा महल, अमेर का किला, (आमेर के किले में हाथी की सवारी देखने को मिलती है ।) शीश महल, शीतला माता मंदिर, जल महल, सिसोदिया रानी का बाग, जंतर मंतर, नाहरगढ़ किला । (जहां से पूरा जयपुर शहर दिखाई देता है) इसके अलावा शहर के परकोटे में तीज की सवारी और गणगौर

की शाही सवारी भी देखने को मिलती है ।

हवा महल यहाँ का सबसे प्रमुख स्थान है, जिसमें बहुत सारे झरोखे बने हुए हैं । जिनका इस्तेमाल प्राचीन समय में रानियों के द्वारा किया जाता था जो वहां से शहर में विशेष अवसरों पर निकलने वाले जुलूस और महोत्सव का झरोखा दर्शन किया करती थी ।

हवा महल के आस-पास ही खरीदारी करने के लिए कई जगह है, जहाँ हजारों की संख्या में विदेशी सैलानियों का दिखना सामान्य सी बात है । यहाँ के प्रसिद्ध बाजार हैं, बापू बाजार, गनगोरी बाजार, बड़ी चोपड़, छोटी चोपड़, चांदपोल । यहाँ की बंधेज की साड़ीयां, लहरिया ओढ़नी, जयपुरी जूतियां (मोजड़ी), गोटी पत्ती का वर्क जगत प्रसिद्ध है । साथ ही यहां की खास लाख की चूड़ियां, जयपुर प्रिंट की बेडशीट सभी को पसंद आती है । इसी के साथ जयपुरी रजाई और मीनाकारी के आभूषण विदेशियों की पसन्दीदा हैं ।

यहाँ परकोटे में खरीददारी करने का अनुभव अलग ही होता है । इसके अलावा यहाँ के हस्त निर्मित सामान भी अपनी अलग पहचान बनाये हुए हैं, जैसे कठपुतली, हस्त निर्मित हाथी और ऊंट, लकड़ी के खिलोने, मिट्टी के बर्तन, ब्लू पोटररी से निर्मित सामान जो यहाँ की खसियत

है और अगर शॉपिंग के साथ ही कुछ खाने का भी लुप्त लेना हो तो यहाँ के पकवानों से कौन परिचित नहीं हैं ।

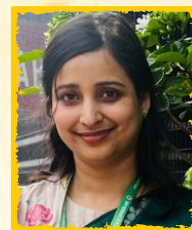
यहाँ के खान-पान और संस्कृति की तो बात ही अलग है । यहाँ का दाल बाटी और चूरमा तो जगत प्रसिद्ध है । जयपुर में एक फेमस जगह है चोखी ढाणी, जहां राजस्थानी संस्कृति की झलक देखने को मिलती है और साथ ही यहाँ पर पारंपरिक तरीके से दाल बाटी चूरमा खिलाया जाता है । यहाँ के व्यंजनों में घेवर, केर, सांगरी की सब्जी, गट्टे की सब्जी, बाजरे की रोटी, माल पुए,

प्याज की कचोरी प्रसिद्ध हैं । जयपुर में गर्मी के मौसम में बहुत भीषण गर्मी पड़ती है । इस लिए यहां घूमने का अच्छा वक्त है सर्दी का मौसम । यहाँ विंटेज कार फेस्टिवल और हाथी महोत्सव का भी आयोजन होता है । पर्यटक यहाँ ऊँट की सवारी और हॉट एयर बैलून की सैर करते हैं । कोई भी शहर अपनी संस्कृति और विरासत के लिए जाना जाता है इसलिए आज के समय में इन ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण भी जरूरी है जिससे ये संस्कृति और विरासतें ऐसी ही बनी रहे ।

- किरन मीना



राजभाषा हिंदी : संवैधानिक प्रावधान



डॉ० सुधा तिवारी
हिन्दी अधिकारी

हमारे देश का संविधान 2 वर्ष 11 माह तथा 18 दिन की अवधि में तैयार हुआ तथा 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ था। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व देश में स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा बनाये जाने की सर्वाधिक मांग की जाती रही थी। स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रीय भावना को अभिव्यक्त करने में हिन्दी के महत्व को देखते हुए यह मांग काफी अहम थी लेकिन दूसरी तरफ भारत की बहुभाषिक संस्कृति एवं अनेक समृद्ध भाषाओं के होते हुए किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में अंगीकार करना एक कठिन चुनाव था। इन परिस्थितियों में संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा स्वीकार किया और राजभाषा हिन्दी के संबंध में विस्तृत प्रावधान बनाए गये।

संविधान की आठवीं अनुसूची

हिन्दी को राजभाषा के रूप में अंगीकार करने के साथ भारत की अन्य प्रमुख एवं महत्वपूर्ण भाषाओं को आठवीं अनुसूची में स्थान दिया गया है। संविधान के भाग 5 एवं 6 के क्रमशः अनुच्छेद 120 तथा 210 में तथा भाग 17 के अनुच्छेद 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350 तथा 351 में राजभाषा हिन्दी के संबंध में प्रावधान किये गए हैं। इन प्रावधानों के साथ ही संप्रति भारत की 22 भाषाओं को संविधान की अनुसूची-8 में मान्यता दी गई है। अल्पसंख्यक आयोग की रिपोर्ट तथा 1968 के राजभाषा संकल्प (3) में यह माना गया है कि सी अनुसूची में सूचीबद्ध भाषाएं देश की प्रमुख भाषाएं हैं। ये भाषाएं इस प्रकार हैं-

- | | |
|------------|-------------|
| 1. हिंदी | 12. तमिल |
| 2. पंजाबी | 13. तेलुगु |
| 3. उर्दू | 14. मलयालम |
| 4. कश्मीरी | 15. कन्नड़, |
| 5. संस्कृत | 16. मणिपुरी |
| 6. असमिया | 17. कोंकणी |
| 7. ओड़िया | 18. नेपाली |
| 8. बांगला | 19. संथाली |
| 9. गुजराती | 20. मैथिली |
| 10. मराठी | 21. बोड़ो |
| 11. सिंधी | 22. डोगरी |

संघ की राजभाषा

संविधान के भाग-17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक में संघ की राजभाषा एवं उसके स्वरूप के संबंध में विस्तृत प्रावधान किये गए हैं।

संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत संघ की राजभाषा के संबंध में प्रावधान किया गया है।

अनुच्छेद 343- (1) संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

अनुच्छेद 344. राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति

एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोग सभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे। इस समिति का

यह कर्तव्य होगा कि वह खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करे और राष्ट्रपति को उन पर अपनी राय के बारे में प्रतिवेदन दे।

अनुच्छेद 345 राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं:-

अनुच्छेद 346 एक राज्य और दूसरे के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा

अनुच्छेद 347. किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध:

यदि इस निमित्त मांग किए जाने पर राष्ट्रपति का यह समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निदेश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए, जो वह विनिर्दिष्ट करे, शासकीय मान्यता दी जाए।

उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा:-

अनुच्छेद 348. उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के लिए प्रावधान करता है।

अनुच्छेद 349. भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया

इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि के दौरान, अनुच्छेद 348 के खंड (1) में उल्लिखित किसी प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाले भाषा के लिए उपबंध करने वाला कोई विधेयक या संशोधन संसद के किसी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना पुरःस्थिति या प्रस्तावित किए जाने की मंजूरी अनुच्छेद 344 के खंड (1) के अधीन गठित आयोग की

सिफारिशों पर और उसे अनुच्छेद के खंड (4) के अधीन गठित समिति के प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात् ही देगा, अन्यथा नहीं।

विशेष निदेश: अनुच्छेद 350 व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा-प्रत्येक व्यक्ति किसी व्यथा के निवारण के लिए संघ या राज्य के किसी अधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अभ्यावेदन देने के हकदार होगा।

अनुच्छेद 350 (क) प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं

प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानी प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधायों की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निर्देश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबंध सुनिश्चित कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।

अनुच्छेद 350 (ख) भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए विशेष अधिकारी

(1) भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए एक विशेष अधिकारी होगा जिसे राष्ट्रपति नियुक्त करेगा।

(2) विशेष अधिकारी का यह कर्तव्य होगा कि वह इस संविधान के अधीन भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए उपबंधित रक्षोपायों से संबंधित सभी विषयों का अन्वेषण करे और उन विषयों के संबंध में ऐसे अंतरालों पर जो राष्ट्रपति निर्दिष्ट करे।

राष्ट्रपति को प्रतिवेदन दे और राष्ट्रपति ऐसे सभी प्रतिवेदनों को संसद के प्रत्येक सदन के समझा रखवाएंगे और संबंधित राज्यों की सरकारों को भिजवाएंगे।

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे ।

इस प्रकार, भारत जैसे बहुभाषी देश में हरियाणा के आस-पास बोली जाने वाली एक बोली खड़ी बोली राजनैतिक एवं सामाजिक कारणों से विस्तृत रूप में अपना स्वरूप विस्तार करती गयी और लगभग पूरे मध्य देश (Central India) में बोली जाने वाली बोलियों भाषाओं को समेटते हुए राष्ट्रीय स्तर की भाषा में हिन्दी ने विकास किया ।



25

सरदार पटेल एक अनोखी शख्सियत

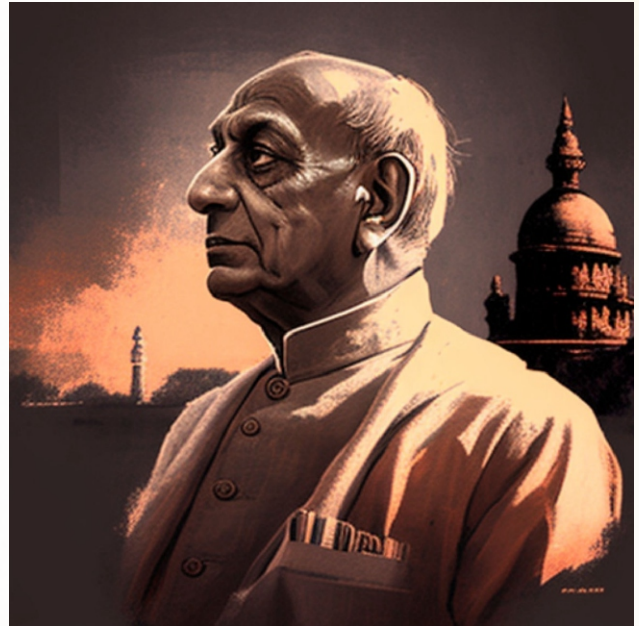


रवि कुमार राज
लेखाकार प्रशासन-III

बल्लभभाई पटेल, जिन्हें भारत में प्रेमपूर्वक 'सरदार पटेल' के नाम से जाना जाता है, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के अग्रणी नेता थे। स्वतन्त्र भारत के महान दूरदर्शी राजनेता व प्रशासक होने के साथ-साथ वे प्रतिष्ठित वकील, बैरिस्टर तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भी थे, जिन्होंने आजादी के पश्चात 1947 से 1950 तक भारत के पहले उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री की भूमिका निभाई। 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नाडियाड गाँव में जन्मे वल्लभभाई पटेल छह बच्चों वाले परिवार में चौथे नंबर पर थे। करमसद में अपनी मां लाडबा की देखरेख में पले-बढ़े, वे अक्सर अपने किसान पिता झावरभाई के साथ खेत जोतने में शामिल होते थे। राष्ट्रीय आंदोलन से लेकर आजादी के बाद भी, सरदार पटेल का योगदान अविस्मरणीय है। पटेल जी के योगदान और दृढ़ व्यक्तित्व को देखते हुए इन्हें "भारत का लौह पुरुष", "भारत के बिस्मार्क" के रूप में भी जाना जाता है। हाल ही में 2018 में, गुजरात में विश्व की सबसे ऊंची मूर्ति "स्टेच्यू ऑफ यूनिटी" पटेल जी को समर्पित की गई है जो "देश की एकता में उनके योगदान" को इंगित करती है। वास्तव में, सरदार पटेल होना आसान नहीं है। एक मजबूत, अडिग और दृढ़ संकल्पित व्यक्तित्व के धनी थे पटेल।

बारदोली सत्याग्रह

गुजरात के सूरत जिले के बारदोली तालुके में राजनीतिक गतिविविधों में तेजी आई, जब 1926 में स्थानीय प्रशासन ने भू-राजस्व दरों में 30 प्रतिशत वृद्धि की घोषणा की। बारदोली सत्याग्रह गुजरात कांग्रेस



कमेटी के अध्यक्ष सरदार पटेल द्वारा फरवरी 1928 में शुरू किया गया था। आन्दोलन को संगठित करने के लिए सरदार पटेल ने पूरे तालुके में 13 छावनियों की स्थापना की तथा किसानों को बढ़ी हुई दरों पर भू-राजस्व अदा करने से मना कर दिया। इसी अवसर पर पटेल ने "कर मत दो" का नारा दिया। इसी बीच, गांधी जी भी बारदोली पहुंच गए। अंततः एक न्यायिक जांच बैठाई गई, जब्त जमीनें लौटा दी गई। तदुपरांत ब्लूमफील्ड और मैक्सवेल समिति ने भू राजस्व में बढ़ोतरी 30 प्रतिशत से घटाकर लगभग 6 प्रतिशत कर दी।

भारत का एकीकरण: रियासतों का विलय

स्वतंत्रता और विभाजन के पश्चात् भारत के सामने एक अन्य बड़ी समस्या रजवाड़ों से संबंधित थी। गांधी ने पटेल से कहा था, "रियासतों की समस्या इतनी कठिन है कि आप ही अकेले इसे हल कर सकते हैं।"

अतः 1947 में वल्लभभाई पटेल और उनके सचिव वी० पी० मेनन ने रजवाड़ों की समस्या का अंतिम समाधान करने का निश्चय किया। इस परियोजना में उन्हें लगभग 2 वर्ष लगे। लगभग 550 रियासतों में से अनेक राजाओं को “कर मुक्त विशेषाधिकार” (प्रिवी पर्स) और अन्य पेंशन लाभ देकर रजवाड़ों को हटा दिया गया। किन्तु मेनन के अनुसार, सभी रियासतें इस शांति पूर्ण क्रांति में खुशी-खुशी शामिल नहीं हुई। प्रतिरोध करने वाली रियासतों में मुख्यतः तीन - जूनागढ़, कश्मीर और हैदराबाद रियासतें शामिल थी। प्रथम, जूनागढ़ का शासक महावत खान पाकिस्तान में शामिल होना चाहता था, जबकि उसकी हिंदु जनता भारत में। इस प्रकार, पटेल, ने जनमत संग्रह के माध्यम से जूनागढ़ का भारत में विलय कर लिया।

द्वितीय, कश्मीर के महाराजा हरि सिंह भारत या पाकिस्तान किसी भी डोमिनियन में शामिल न होकर, अपनी रियासत को स्वतंत्र रखना चाहते थे। किन्तु इसी दौरान, पाकिस्तान की कबायली सेना द्वारा कश्मीर पर आक्रमण कर दिया गया। फलस्वरूप महाराज हरि सिंह को विवश होकर 26 अक्टूबर 1947 को भारत के साथ विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने पड़े। तत्पश्चात कबाइलियों को खदेड़ने के लिए भारतीय सेना जम्मू कश्मीर भेज दी गई और कश्मीर भारत में शामिल हो गया।

तृतीय, हैदराबाद का निजाम अपनी संप्रभुता को बनाए रखने के पक्ष में था यद्यपि उसकी बहुसंख्यक जनता भारत में शामिल होने की इच्छुक थी। अतः बहुसंख्यक जनता ने हैदराबाद को भारत में सम्मिलित करने के पक्ष में तीव्र आंदोलन आरंभ कर दिया। निजाम आंदोलनकारियों के प्रति दमन की नीति पर उतर आया। अंततः 13 सितंबर 1948 को भारतीय सेना हैदराबाद में प्रवेश कर गई और 18 सितंबर को निजाम ने

आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार, 1949 में हैदराबाद को भी भारत में सम्मिलित कर लिया गया।

संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका

भारत की संविधान सभा में वरिष्ठ सदस्य होने के नाते सरदार पटेल संविधान को आकार देने वाले प्रमुख नेताओं में से एक थे। वे प्रांतीय संविधान समितियों के अध्यक्ष थे। उन्होंने प्रांतों के लिए एक मॉडल संविधान का संचालन किया जिसमें राज्यपाल के लिए सीमित शक्तियां थी। इसके अतिरिक्त, वे मौलिक अधिकारों, अल्पसंख्यकों एवं जनजातियों तथा बहिष्कृत क्षेत्रों के लिए सलाहकार समिति की अध्यक्षता कर रहे थे। पटेल ने यह प्रावधान दृढ़ता के साथ पेश किया था कि राज्य धर्म, नस्ल, जाति या लिंग के आधार पर किसी भी नागरिक से भेदभाव नहीं करेगा, साथ ही कुओं, तालाबों, घाटों, सड़कों तथा सार्वजनिक रिसॉर्ट जैसे स्थानों पर निर्बाध पहुंच प्रदान करेगा। पटेल के नेतृत्व में सलाहकार समिति ने इसे माना कि अस्पृश्यता के उन्मूलन को मौलिक अधिकारों में महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए और उनका मानना था कि यह खंड उचित तरीके से तैयार किया गया है तथा इसमें कोई संशोधन नहीं होना चाहिए।

निष्कर्ष के रूप में देखा जाए तो, सरदार पटेल भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक महान हस्ती थे। पटेल जी की दृढ़ शक्ति, दृढ़ कार्यवाही की क्षमता, त्वरित निर्णय लेने की क्षमता, राष्ट्रीय गौरव की भावना और कुशल वाक्पटुता, उनके मजबूत और ठोस व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम थे जो उन्हें अन्य नेताओं से विशिष्ट बनाते हैं। सरदार पटेल ने गांधीवादी आंदोलनों में जीवंत भूमिका निभाते हुए, आजाद भारत के एकीकरण में, अखंडता बनाए रखने में सर्वोपरि योगदान दिया जिसके बाद इतिहासकारों और जीवनीकारों ने उन्हें “बिस्मार्क ऑफ इंडिया” कह कर पुकारा।

थोड़ा जल्दी



अंकित कुमार ठाकुर
लेखकार, सामान्य प्रशासन-I

एक शादी शुदा औरत जो एक बेटी है, एक बीवी है, एक माँ है और बेहद ही कुशल एवं कामयाब गृहिणी भी हैं। उस औरत की आखों में कभी झाँक कर देखा है क्या आपने ?

अगर देखना चाहें कभी, तो दिखेगा कि कैसे वो औरत हर रोज, हर पहर केवल अपने घर, अपने परिवार की सलामती के सपने देखती रहती है। कैसे, उसके सपने में वे कभी अपनी बेटी को सफलता के उड़ान भरते देखती है, कभी अपने नन्हें से राजकुमार को बड़े होकर हीरो बनते हुए देखती है तो कभी अपने हैरान-परेशान से रहने वाले पति की खुशियों को लौटने के सपने देखती है। कैसे वो अपने बूढ़े सास-ससुर को सारी वास्तविक सुख प्राप्त कराकर जीते-जी स्वर्ग का अहसास करा देने के सपने देखती है। अगर देखना चाहें कभी, तो दिखेगा कि कैसे वो औरत अपने खुद के सपने को मारकर दूसरों के सपने पुरे करने के सपने देखती है। या यूँ कहें, कि वक्त और हालात उसे अपने सपनों को मारकर दुसरे के सपनों को संजोने के हुनर बख्शा ही जाते हैं।

मगर क्या हो, अगर ऐसी ही किसी औरत जो अपने लिए सपने देखने भूल चुकी हो, उसके लिए हम और आप उसके हिस्से के सपने देखें ? क्या हो अगर आप अपनी माँ की पुरानी डायरी के पन्ने पलट कर उसकी अधूरी ख्वाहिशें, उसके टूटे हुए सपनों को एक बार फिर जिन्दा कर दें ? क्या हो अगर हम अपनी बीवी को उसके भी सपने देखने का मौका प्रबल करें ? क्या हो जो एक दिन चाय-नाश्ते के वक्त बातचीत का मुद्दा ये न हो कि आने वाले वक्त में आप क्या करना चाहते हैं या आप क्या बनना चाहते हैं। बल्कि ये हो कि आपकी माँ या चाची या भाभी

या बीवी अपने भविष्य को लेकर क्या सोचती है और आगे क्या करना चाहती है ?

क्या हो जो हफ्ते में एक दिन उस इन्सान की भी चिंता करें जो पूरी जिन्दगी सिर्फ और सिर्फ हमारी चिंता करते आई है ? क्या हो जो उस देवस्वरूप अद्वितीय व्यक्तित्व की खुशियों के लिए भी कुछ विशेष करें।

शायद आपको मालूम नहीं होगा मगर आपकी तरह आपकी माँ के भी कुछ शौक रहे होंगे। आपकी बीवी की भी कुछ चाहतें होंगी। आपके घर की औरतों के भी कुछ सपने, कुछ अरमानें होंगी। शायद, आपकी तरह उन्हें भी प्रेमचंद, निराला, शरत, चेतन को पढ़ने का शौक रहा होगा कभी। शायद, उनको भी चाहिए होता होगा कभी-कभी कि हम उनके पास बैठें और उनसे उनके दिन के बारे में पूछे कि उनका दिन कैसा बीता ?

तो क्यों न हम सब, चाहे वो बेटी हो या बेटा हो या फिर पति हो, एक बार उन आँखों में झाँक कर देखने की कोशिश करें जिन्होंने हमें दुनिया देखना सिखाया। जिन्होंने हमारे आपके खुशियों के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। एक बार को क्यों न अपने बारे में सोचना छोड़ कर उनके बारे में सोचें, जिनके पास खुद के बारे में सोचने का वक्त ही नहीं रहता।

तो क्यों न हम, इस बार थोड़ा जल्दी अपनों को समझ कर देखें। क्यों न थोड़ा जल्दी हम उन्हें भी उनकी खोयी हुई खुशियाँ उन्हें लौटाएं। क्यों न थोड़ा जल्दी उनके भूले हुए सपनों को फिर से जीवित करें। क्यों न थोड़ा जल्दी उन्हें यह अहसास करा दें कि वे वास्तव में भगवान् द्वारा इस धरा पर भेजी गयी ब्रह्माण्ड की सबसे खुबसूरत संरचना है।

अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस



रितेश गुप्ता
लेखाकार प्रशासन-I

समाज में पुरुषों के योगदान और उपलब्धियों को पहचानने और उनका जश्न मनाने के लिए हर साल 19 नवंबर को अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य उन मुद्दों को उजागर करना है जो पुरुषों की भलाई को प्रभावित करते हैं, लैंगिक समानता को बढ़ावा देते हैं और पुरुषों और महिलाओं के बीच संबंधों में सुधार करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस पुरुषों के स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, पितृत्व, सकारात्मक पुरुष भूमिका उदाहरण और आज की दुनिया में पुरुषों के सामने आने वाली चुनौतियों जैसे महत्वपूर्ण विषयों को संबोधित करने का अवसर प्रदान करता है।

अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस का एक अन्य प्रमुख पहलू पितृत्व और सकारात्मक पालन-पोषण का उत्सव है। पिता बच्चों के पालन-पोषण और परिवारों की भलाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस बच्चों के जीवन में शामिल और सहायक पिता के महत्व को स्वीकार करता है और सकारात्मक पालन-पोषण प्रथाओं को बढ़ावा देता है जिससे बच्चों और माता-पिता दोनों का लाभ होता है।

भारत में अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस का उद्घाटन समारोह 19 नवंबर 2007 को अग्रणी भारतीय पुरुष अधिकार संगठन इंडियन फैमिली द्वारा आयोजित किया गया था। 19 नवंबर की तारीख को इस तथ्य के आधार पर स्वीकार किया गया था कि ऑस्ट्रेलिया और वेस्ट इंडीज (जमैका, त्रिनिदाद और टोबैगो) पहले से ही अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस उस तारीख को मना रहे थे। यह कार्यक्रम 2008 में भारत में फिर से मनाया गया और

इस उत्सव को सालाना जारी रखने की योजना बनाई गई।

इसके अलावा, अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस समाज में पुरुषों के सामने आने वाली चुनौतियों, जैसे रूढ़िवादिता, भेदभाव और सामाजिक अपेक्षाओं को संबोधित करता है। पुरुषों से अक्सर पुरुषत्व की पारंपरिक धारणाओं के अनुरूप होने की अपेक्षा की जाती है, जो उनके मानसिक और भावनात्मक कल्याण के लिए हानिकारक हो सकता है। अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस लैंगिक भूमिकाओं पर चर्चा को प्रोत्साहित करता है और लैंगिक असमानता की परवाह किए बिना सभी व्यक्तियों के लिए अधिक समावेशी और सहायक वातावरण को बढ़ावा देता है।

इसके अलावा, अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस यह पहचान कर लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है कि पुरुषों को भी लैंगिक भेदभाव और असमानता से संबंधित मुद्दों का सामना करना पड़ता है। सभी लिंगों के लिए समान अधिकारों और अवसरों की वकालत करके, अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज बनाने में योगदान देता है जहां हर कोई बढ़ सकता है और अपनी पूरी क्षमता तक पहुंच सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस के निम्न कुछ उद्देश्य इस प्रकार हैं:-

1. सकारात्मक पुरुष अनुकरण उदाहरण को बढ़ावा देना; सिर्फ फिल्मी सितारे और खिलाड़ी ही नहीं, बल्कि रोजमर्रा के काम काजी वर्ग के पुरुष भी, जो सभ्य, ईमानदार जीवन जी रहे हैं।

2. समाज, समुदाय, परिवार, विवाह, बाल देखभाल और पर्यावरण में पुरुषों के सकारात्मक योगदान का जश्न मनाना ।
3. पुरुषों के स्वास्थ्य और कल्याण पर ध्यान केंद्रित करना: सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक ।
4. सामाजिक सेवाओं, सामाजिक दृष्टिकोण और अपेक्षाओं और कानून के क्षेत्रों में पुरुषों के खिलाफ भेदभाव को उजागर करना ।
5. लैंगिक संबंधों में सुधार लाना और लैंगिक समानता को बढ़ावा देना ।
6. एक सुरक्षित, बेहतर दुनिया का निर्माण करना, जहां लोग सुरक्षित रह सकें और अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने के लिए विकसित हो सकें ।

कुल मिलाकर, पुरुषों के मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने, सकारात्मक पुरुष भूमिका को बढ़ावा देने, मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान करने, पितृत्व का जश्न मनाने और लैंगिक समानता की वकालत करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस का जश्न आवश्यक है । समाज में पुरुषों के योगदान को पहचानने और सम्मान देने से, अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस सभी लिंग के व्यक्तियों के बीच एकता, समझ और समर्थन की भावना को बढ़ावा देता है । यह पुरुषों की उपलब्धियों के बीच एकता, समझ और समर्थन की भावना को बढ़ावा देता है । यह पुरुषों की उपलब्धियों का जश्न मनाने, उनके संघर्षों को स्वीकार करने और सभी के लिए अधिक समावेशी और न्यायसंगत दुनिया की दिशा में काम करने का दिन है ।

अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस

- दुनिया भर में हर 19 नवंबर को मनाया जाता है मेन्स डे
- भारत में वर्ष 2007 से मनाया जा रहा है ये खास दिन
- अमेरिका, कनाडा और यूरोप के कुछ देशों में 1992 में पहली बार मनाया गया ये दिन

- इसके लिए प्रोफेसर थॉमस योस्टर ने किया था सबसे पहले प्रयास
- 1998 में त्रिनिदाद एंड टोबेगो में पहली बार 19 नवंबर को मनाया गया ये दिन

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है - बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

आज कल की गर्मी



सुमित जांगड़ा
लेखाकार, राजभाषा

गर्मी का मौसम आ गया है और सूरज महाराज ने फिर से हमारे जीवन में अपनी गरिमा और तपिश का जलवा दिखाना शुरू कर दिया है, ऐसा लगता है जैसे सूरज महाराज अपनी पूरी बारात लेकर धरती पर उतरे हैं और हर किसी के दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं। आजकल की गर्मी कुछ ऐसी हो गई है कि इंसान तो क्या, पंखे और एसी भी पसीना-पसीना हो जाते हैं। सूरज महाराज सुबह-सुबह ही अपने पूरे जलवे के साथ प्रकट होते हैं। मानों वे कह रहे हों, “आज देखता हूँ तुम सबको, कौन बचाता है मुझसे।” घर से बाहर निकलते ही ऐसा लगता है जैसे हम किसी विशाल तंदूर में प्रवेश कर गए हों। घर के अंदर एसी और कूलर भी सूरज महाराज के आगे हाथ जोड़कर खड़े हो जाते हैं।

1. गर्मी का स्वागत

गर्मी का स्वागत कैसे किया जाए, यह हमारे लिए हर साल बड़ा प्रश्न होता है। इस बार, मैंने तय किया कि मैं गर्मी का स्वागत ठंडे पानी की बाल्टी से करूंगा। जैसे ही सूरज महाराज अपनी पूरी तेजी से तपने लगे, मैंने सोचा कि बालकनी में जाकर सूरज को यह बता दूँ कि मैं तैयार हूँ। बाल्टी भर के बालकनी में पहुंचा, मगर गर्मी की ऐसी तीव्रता थी कि पानी बाल्टी में ही उबलने लगा। मैंने सोचा, “वाह! गर्मी का स्वागत तो मैं क्या, पानी भी नहीं कर पा रहा।”

2. गर्मी में सबसे पहला और महत्वपूर्ण अनुभव होता है पसीना। ऐसा लगता है जैसे शरीर में पसीने की

फैक्ट्री लग गई हो। अगर इस पसीने का इस्तेमाल किसी तरह से बिजली बनाने में किया जा सके, तो हमारा देश आत्मनिर्भर हो जाए। अब तो ऐसा हो गया है कि रसोई में पराठे बनाते समय पसीना भी एक अतिरिक्त नमक का काम कर रहा है। पसीना बहता जाता है और पराठे में घुलता जाता है, बिल्कुल जैविक नमक।

3. छाते की महिमा

गर्मी के दिनों में छाता नहीं, बल्कि “सूरज देवता का कवच” बन जाता है। पहले छाता सिर्फ बरसात में काम आता था, लेकिन अब गर्मी में भी उसका जलवा बरकरार है। सड़क पर चलने वाले लोग छाते के नीचे ऐसे चलते हैं जैसे कोई राजकुमार अपनी सेना के साथ हो। अगर गलती से भी छाता घर भूल गए, तो मानो रणभूमि में बिना कवच के उतर गए हों।

4. बिजली और पंखे का रिश्ता

गर्मी आते ही पंखा और एसी हमारे सबसे अच्छे दोस्त बन जाते हैं। लेकिन आजकल की गर्मी में बिजली



का आना-जाना भी ऐसा हो गया है जैसे सोशल मीडिया पर ट्रेंड्स का आना-जाना। एक मिनट के लिए बिजली आई तो मानो पूरा मोहल्ला ट्विटर पर ट्रेंड करने लगा। सब अपने-अपने पंखे और एसी चलाने लगते हैं, लेकिन अगले ही पल बिजली चली जाती है और हम सब फिर से पुराने ज़माने के राजा-महाराजाओं की तरह हाथ में पंखे से हवा करने लगते हैं।

5. पानी और प्यास का संग्राम

पानी की कहानी भी कुछ कम मजेदार नहीं है। टंकी में पानी ऐसे गायब हो जाता है जैसे आपके बैंक खाते से अचानक पैसे। मोहल्ले की औरतें जब पानी भरने जाती हैं, तो वहाँ का दृश्य ऐसा होता है मानो कुंभ का मेला लगा हो। कोई बाल्टी से पानी खींच रहा है, तो कोई पाइप से लड़ाई कर रहा है।

गर्मी में पानी की प्यास भी अजीब होती है। ऐसा लगता है कि हम सब ऊंट बन गए हैं और पानी की एक-एक बूंद हमारे लिए अमृत बन गई है। जैसे ही पानी का गिलास मिलता है, हम उसे ऐसे पकड़ते हैं जैसे कोई जादुई चिराग मिल गया हो। और हाँ, फ्रिज के ठंडे पानी के लिए तो घर में महाभारत भी हो सकती है। एक बार मैंने देखा कि मेरी माँ और बहन के बीच ठंडे पानी के लिए ऐसा युद्ध छिड़ा था कि लगा, महाभारत का पुनः प्रसारण हो रहा है।

6. बाजार और गर्मी

गर्मी के मौसम में बाजार जाना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो जाता है बाजार में सब्जीवाले से लेकर

आइसक्रीम वाले तक सब ऐसे दिखते हैं जैसे किसी ने उन्हें धूप में तवा पर रख दिया हो। सब्जीवाले की सब्जियाँ तो इतनी मुरझा जाती हैं कि उन्हें देख कर लगता है, मानो वो भी गर्मी से तंग आकर आत्महत्या करने की सोच रही हों।

7. सड़क का हाल

सड़क पर चलना मतलब अपने शरीर को भट्टी पर सेंकने जैसा है। चप्पलें पिघलने लगती हैं। और ऐसा लगता है कि आपके पैर सड़क पर चिपक जाएंगे। लोगों का बाहर निकलना तो वैसे भी कम हो गया है, लेकिन अगर किसी को बाहर जाना पड़े तो वह इसे अपनी शौर्य गाथा समझता है।

8. गर्मी का अंतिम संवाद

और आखिर में, गर्मी की छुट्टियाँ। स्कूल बंद, बच्चे घर में, और माता-पिता की हालत देखकर ऐसा लगता है जैसे वे गर्मी के साथ-साथ पिघल रहे हों। बच्चों की ऊर्जा और गर्मी की तपिश का कॉम्बिनेशन किसी रॉकेट से कम नहीं। आजकल की गर्मी ने सच में हमारे जीवन में एक नया रंग भर दिया है। ये रंग कभी-कभी हँसी से भरा होता है, तो कभी-कभी परेशानी से। गर्मी का यह मौसम हमें भले ही परेशान करे, लेकिन इसके बिना हमारे जीवन में मजा भी नहीं आता। हमें हँसते-हँसते इन मुश्किलों का सामना करना चाहिए और सूरज देवता की इस तपिश को सहन करना चाहिए, क्योंकि यही गर्मी एक दिन हमें ठंडे मौसम की खुशियाँ भी देती है।

राष्ट्रभाषा के बिना आजादी बेकार है :- अवनींद्रकुमार विद्यालंकार

बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ



संदीप कुमार मान
डी.ई.ओ.

“पापा मैं कल कॉलेज नहीं जाऊंगी.... अब और बर्दाश्त नहीं होता मुझसे ।” कविता ने लगभग रोते हुए अपने पिता सुंदर से कहा । “क्या हुआ बेटी बताओ कुछ, यूँ रोना बन्द करो, बताओ भी ।” सुंदर ने पूछा । “पापा रोज आते जाते रास्ते में एक लड़का है, वो मुझे छेड़ता है, फिकरे कसता है, उसके साथ दो चार लड़कों और भी रहते हैं, मेरा रस्ता चलना मुहाल कर दिया है इन लड़कों ने ।” कविता ने आँखों में पानी भरते हुए कहा । “कौन लोग हैं, तू अभी चल मेरे साथ, मैं उसकी खाल उधेड़ दूँगा ।” सुंदर ने ताव खाते हुए कहा । “नहीं, मैं नहीं जाऊंगी, आप ही जाओ, शमशेर नाम है उसका ।” कविता ने बताया ।

सुंदर बहुत गस्से में बाहर गया, और लौटा तो उसका मुँह उतरा हुआ था । “क्या हुआ, कविता के पापा, उसको अच्छे से धमका आये न ।” कविता की माँ ने पूछा । “अरे वो तो गुंडे हैं पूरे छः सात जने थे, वो तो मरने मारने पर उतारू हो गए, और बोले ज्यादा गर्मी दिखायेगा तो कविता पर तेजाब डाल देंगे ।” सुंदर ने घबराये हुए कहा । “ओह अब क्या होगा ? ये तो बहुत बड़ी बात हो गई, मेरा तो दिल घबरा रहा है, मेरी फूल सी बच्ची कितनी तकलीफ में आ जायेगी ।” कविता की माँ बहुत घबरा गई । “वो लड़का अपने ननिहाल में रहता है यहाँ, मैंने उसके नाना का पता कर लिया है, उससे मिलकर गुहार लगाऊंगा कि अपने नाती को समझाए और वो हमारी कविता को परेशान करना छोड़ दे । मैं उसके पास जाकर आता हूँ ।” कहते हुए सुंदर उठ खड़ा हुआ ।

“मैं भी चलती हूँ, मैं भी उससे विनती करूंगी ।” कविता की माँ ने कहा । “नहीं, मैं ही जाता हूँ ।” कहकर सुंदर चला गया ।

“जी वो आपका नाती मेरी बेटी को राह चलते छेड़ता है, उसे समझाइए यूँ मेरी बेटी को न सताये । उसकी और मेरी इज्जत का सवाल है । मेरी बेटी कहती है कि वो अब कॉलेज नहीं जाएगी ।” सुंदर ने गिड़गिड़ाते हुए शमशेर के नाना से कहा । “सुषमा याद है क्या तुमको ।” उस बुजुर्ग ने कहा । “सुषमा.... ओह.... हम्म ।” सुंदर ने बैठे हुए दिल से कहा । “याद है न तुम और तुम्हारे दो चार लफंगे दोस्त मेरी बेटी सुषमा को स्कूल जाते वक्त छेड़ते थे, मैंने अपनी इज्जत के लिए उसका स्कूल बीच में छुड़वाकर उसकी शादी कर दी थी । मैंने भी वही दर्द महसूस किया है जो आज तुम कर रहे हो । वक्त अपना बदला लेता है, कल कोई सुंदर था आज कोई शमशेर है । वैसे बता दूँ ये शमशेर सुषमा का ही बेटा है, वह अपनी माँ के साथ किये गए दुर्व्यवहार का बदला ले



रहा है, और मुझे इससे सुकून मिल रहा है। चले जाओ यहाँ से इससे पहले कि शमशेर आकर तुम्हारे साथ हाथापाई करे।” उस बुजुर्ग ने सुंदर को अपने शब्दों के साथ जैसे जोर से जमीन पर ला पटका हो। सुंदर ने एक दो मोहल्ले वालों से मदद के लिए कहा। सबने उसे यही कहा भाई अपने कर्म भूल गया क्या? मोहल्ले की लड़कियों को कितना सताया है तूने? अब खुद पर आई है तो मदद माँग रहा है... कोई मदद नहीं करेगा, कौन गुँडों के मुँह लगे।

सुंदर बिल्कुल टूटा हुआ घर आ गया, “क्या कहा उस आदमी ने।” कविता की माँ ने पूछा, कविता भी वहीं बैठी थी। “अरे वो बुढ़ा तो बहुत अकड़ू है, बोला मैं क्या करूँ जवान लड़के घरवालों की बात कहां मानते हैं। सुनो, क्यों न हम पुलिस में शिकायत दर्ज करवा दें।” सुंदर ने हिम्मत दिखाते हुए कहा। “पापा पुलिस में शिकायत दर्ज की तो वो गुस्से में आकर मुझ पर तेजाब वेजाब न फेंक दें। अखबार में बहुत पढ़ने को मिलता है, और पुलिस भी उनको क्या सजा दिलवा पाएगी, साल छह महीने से ज्यादा तो सजा होगी नहीं उन्हें। “कविता ने आशंका जताई।” अब मैं क्या करूँ बेटा? कहाँ जाऊँ? किससे मदद मांगू?, मोहल्ले में भी कोई साथ देने को तैयार नहीं है।” सुंदर ने बिल्कुल निढाल और लगभग रोते हुए कहा।

“मोहल्ले वाले तो तब मदद करते न पापा, जब आप एक अच्छे इंसान होते। पूरे मोहल्ले की लड़कियों को आपने अपने दो चार लफंगे दोस्तों के साथ मिलकर परेशान किया है। अब कहाँ हैं वो आपके लफंगे दोस्त? कितनी लड़कियों की पढ़ाई आप जैसे शोहदों और

दिलफेंक आशिकों की वजह से उनके घरवालों ने छुड़वा दी, क्योंकि उन सब में भी जैसे आज आपकी तरह हिम्मत नहीं थी। जानते हो वो जो शमशेर है न उसकी माँ का नाम सुषमा है, वो पढ़ लिखकर टीचर बनना चाहती थी। उसकी पढ़ाई आपके कारण छूट गई। उसकी जल्दी शादी करवा दी गई, वो तो उसका पति अच्छा था जिसने उसे पढ़ाया और वो मेरे कॉलेज में अब प्रोफेसर है... और ये शमशेर मुझे कोई छेड़ता वेड़ता नहीं है। उसकी माँ ने उसे महिलाओं का सम्मान करना सिखाया है। वो तो मुझे आपकी करतूतों का पता चला तब मैंने शमशेर और उसकी माँ के साथ मिलकर आपको सबक सिखाने के लिए ड्रामा किया है। पापा आप जो दूसरों के साथ करते हैं न वो आपको भी कभी देखना पड़ सकता है.... इसलिए किसी को सताना नहीं चाहिए.... आपने वो कहावत तो सुनी होगी न... ‘मत सता लड़की को पाप होगा, तू भी किसी दिन किसी लड़की का बाप होगा।’ कविता ने हिकारत भरी नजरों से सुंदर से कहा।

सुंदर सर झुकाए अपने पाँवों से जमीन कुरेद रहा था। “आप अपने किये गए अपराध का प्रायश्चित्त कर सकते हैं, आप लोगों को समर्थन में लीजिये और एक अपना ग्रुप बनाइये जो मुहल्ले की लड़कियों को छेड़ने वालों को सबक सिखा सके, 10 के आगे पांच का कोई मोल नहीं रहता, आप ये करेंगे तो आस-पास के मुहल्लों में भी ये बात जाएगी, वो भी शायद ऐसा कोई ग्रुप बना लें, जिसका उद्देश्य हो ‘बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ’ पापा आपको ये करना ही होगा। कहीं से तो नई शुरूआत होनी ही चाहिए।” कहकर कविता अपने शर्मिंदा हुए पापा के गले से लग गई।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता :- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

माता-पिता



लोकेश
हाऊस कीपिंग स्टाफ

इस कहानी में एक बेटी ने माता-पिता के अस्तित्व के बारे में विस्तार से बताया गया है। इस कहानी में लड़की के परिवार में माता-पिता, दो भाई-भाभियां थीं। लड़की की शादी हो जाने के बाद वह अपने ससुराल चली गयी। उसके ससुराल में शुरूआत के दिनों में घर में क्लेश रहता और परिवार में अनबन बनी रहती थी। वह अपने ससुराल में परिवार के बीच घुल-मिल नहीं पा रही थी। समय जैसे-जैसे गुजरता रहा और कुछ महीने बाद सास का देहांत हो गया जिस कारण घर में मातम बना रहता हमेशा। चारों तरफ घर में सन्नाटा बना रहता, एक वर्ष बाद लड़की की झोली खुशियों से भर गई जब उसके घर एक नन्हीं परी ने जन्म लिया। घर में लड़की के जन्म के बाद सब खुश थे। मानो घर में फिर से खुशियां आ गई। दूसरी तरफ लड़की के मायके में उसकी मां कई महीनों से बीमार चल रही थी। अचानक उसकी मां का देहांत हो गया। लड़की माँ के देहांत के बाद सदमे में आ गई और उसका मायके में आना जाना कम हो गया। लड़की के मायके में पिता जी थे, भाई, भाभियां थी पर माँ की कमी को कोई पूरा नहीं कर सकता। माँ के जाने के बाद पिता जी अकेले पड़ गए। पति-पत्नी का जोड़ा टूट जाने के बाद जीवन अंधकार से कम नहीं लगता। पिता जी हमेशा खामोश रहने लगे और हमेशा चिंता में डूबे रहते। घर में दोनों भाइयों में से एक भाई बचपन से ही बीमार रहता था। बड़ी मुश्किल से उसकी शादी हुई एक लड़की हुई। पर उसका परिवारिक जीवन में हमेशा क्लेश रहता क्योंकि

वो कोई नौकरी नहीं करता था। जिस कारण उसकी पत्नी हमेशा क्लेश करती। सभी उसको हमेशा डांटते रहते, नौकरी कब करेगा, पर वो भी क्या करे, उसकी बीमारी के कारण कहीं भी नौकरी नहीं मिल रही थी। उसकी नौकरी नहीं करने के कारण उसकी पत्नी हमेशा के लिए उसको छोड़कर अपने मायके चली गई। परिवार में अब हर रोज क्लेश रहने लगा। बड़ा भाई अपनी बीवी को लेकर अपने ससुराल चला गया। अब परिवार में बस उसका बीमार भाई और पिता जी थे। लड़की अपने ससुराल में कई वर्षों बाद अपने मायके गई जहां चारों तरफ सन्नाटा था। घर में मायूस पिता जी को देखकर लड़की हमेशा चिंता में डूबी रहती फिर एक दिन उसके बीमार भाई को अटैक आ गया और उसका भी देहांत हो गया। अब पिता जी घर में अकेले रह गये। लड़की की माता और बीमार लड़के की मृत्यु के बाद उनका जीवन बेरंग हो गया। पूरा घर खाली हो गया, पिता जी घर में अकेले रहते। बड़ा लड़का अपनी बीवी के साथ अपने ससुराल में रहता। लड़की अब अपने मायके कैसे आए, उसके मायके में उसके पिता जी के अलावा कोई भी नहीं था। उसके पिता जी की आयु तकरीबन 70 वर्ष की थी, वो भी बिमारियों से घिरे हुए थे। अचानक उनकी भी मृत्यु हो गई। लड़की के मायके में अब कोई नहीं बचा सिवा उसके बड़े भाई-भाभी के उसके भाई-भाभी भी नाम मात्र के थे, वह अपनी बहन की बिलकुल भी देखभाल नहीं करते थे। माता-पिता के देहांत के बाद उसके बड़े भाई-भाभी अब प्रॉपटी को अपने नाम करवाने की कोशिश में लगे हुए थे। लड़की को हिस्सा ना देना

पड़े, इस कारण उसके खिलाफ में थे। वो सारी प्रॉपटी अकेले ही लेना चाहते थे। अपने भाई भाभी के इस बर्ताव के कारण लड़की गुस्से में थी, अब वो भी पिता जी की प्रॉपटी में हिस्सा लेगी तो भाई-बहन का रिश्ता हमेशा के लिए खत्म कर देंगे। उनका कहना था कि बेटी अपने पिता जी की प्रॉपटी में हिस्सा नहीं ले। लड़की अब चिंता में पड़ गई के भाई-बहन का रिश्ता बना कर रखे या प्रॉपटी में हिस्सा ले, उसको कुछ समझ नहीं आ रहा था। लड़की अपने भाई के इस बर्ताव के कारण डिप्रेशन में हो गई। उसने यह फैसला लिया और सारी प्रॉपटी अपने भाई-भाभी के नाम कर दी। और भाई-बहन का रिश्ता

भी हमेशा के लिए तोड़ दिया। क्योंकि वो प्रॉपटी के लालची थे। कहानी के अंत में उसका मायका बिना मां-बाप के बिलकुल खत्म हो गया। इस लालची दुनिया में पैसा ही सब कुछ है कुछ लालचियों के लिए जो पारिवारिक रिश्तों को तोड़ता है। भगवान की कृपा से लड़की का ससुराल पक्ष बहुत अच्छा था। पिता के समान ससुर जी थे, भाई की जगह पर देवर था और बहन के सामान ननद थी। परिवार के सभी सदस्य बहुत अच्छे थे, जिस कारण उसको कभी अपने मायके की कमी महसूस नहीं हुई। उसका जीवन अब सुख-शांति से व्यतीत होने लगा।

चाय



सुमित, लेखाकार

चाय की प्याली में बसी है जादू की बात,
सुबह की ताजगी, शाम की मुलाकात।
भाप की लहरें और अदरक की महक,
हर घूँट में छिपी होती है सुकून की चहक।

घर हो या हो ऑफिस का माहौल,
चाय के बिना हर जगह लगे बेकार।
मिठास हो या मसालों का तड़का
चाय का स्वाद तन-मन को दे भड़का।

दोस्तों की टोली में गपशप की रेल,
हर चाय की चुस्की में होती है नयी बात की बेल।
चाय के संग बैठकर सब भूल जाते,
दुखों के बादल भी हंसकर उड़ जाते।

कभी किताब के साथ, कभी अकेलेपन का साथी,
चाय बन जाती है हर भाव की साथी।
बिस्किट की डुबकी और पकौड़ों का मेल,
चाय के बिना लगता अधूरा सब खेल।

सर्दियों में गरम चाय का अहसास,
गर्मी में भी कुल्हड़ वाली चाय ही है खास
बरसात की बूंदें और चाय की चुस्की,
इनसे ही तो है जीवन की असली खुशनुमा बस्ती।

चाय की प्याली में छिपा है आनंद अपरंपार,
हर दिल की धड़कन में चाय का ही है प्यार।
जीवन की हर मुश्किल को आसान कर जाती,
चाय की प्याली हमें सच्चा सुख दे जाती।

नजर रहती है



रविन्द्र कुमार, पर्यवेक्षक

नज़र रहती है, नज़र रहती है
ये नज़र साथियो बहुत कुछ कहती है
भक्त की भगवान पर
शैतान की ईसान पर
ईसान की संतान पर, और
छोटों की सम्मान पर

नज़र रहती है, नज़र रहती है
ये नज़र साथियो बहुत कुछ कहती है
पुलिस की चोर पर,
गोपियों की चितचोर पर,
सांप की मोर पर, और
नोकर की “दे दो-और” पर
नज़र रहती है, नज़र रहती है
ये नज़र साथियो बहुत कुछ कहती है

ड्राइवर की सवारी पर,
डॉक्टर की महामारी पर,
गृहणी की तरकारी पर
और आरोपी की हकदारी पर

नज़र रहती है नज़र रहती है
ये नज़र साथियो बहुत कुछ कहती है
अफसर की कर्मचारी पर,
माँ बाप की जिम्मेदारी पर,
पुलिस की दुराचारी पर, और
सी.बी.आई. की भ्रष्टाचारी पर

नज़र रहती है, नज़र रहती है
ये नज़र साथियो बहुत कुछ कहती है
नेताओं की वोट पर,
बेईमानों की नोट पर
सोनारों की खोट पर, और
दुश्मनों की चोट पर

नज़र रहती है, नज़र रहती है
ये नज़र साथियो बहुत कुछ कहती है
ड्राइवर की स्टेयरिंग पर,
बैंकर की क्लेयरिंग पर,
छात्र की इन्जीनियरिंग पर, और
झपटमार की डायमंड रिंग पर
नज़र रहती है, नज़र रहती है
ये नज़र साथियो बहुत कुछ कहती है

बच्चों की टी. वी. पर,
पति की बीवी पर,
बीमार की कीवी पर, और
पुलिस की सी.सी.टी.वी. पर

नज़र रहती है, नज़र रहती है
ये नज़र साथियो बहुत कुछ कहती है
डीपू-वाले की आटे पर,
दुकानदार की घाटे पर,
फूल की कांटे पर, और
शरारती की चांटे पर

नज़र रहती है, नज़र रहती है
ये नज़र साथियो बहुत कुछ कहती है

नेताओं की भाषण पर,
गरीबों की राशन पर
कर्मचारी की निष्कासन पर, और
इंद्र देव की इन्द्रासन पर

नज़र रहती है, नज़र रहती है
ये नज़र साथियो बहुत कुछ कहती है

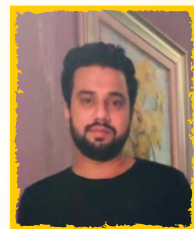
अभिनेत्री की अभिमान पर
धरती की आसमान पर,
पुलिस की अनजान पर, और
रेफरी की पहलवान पर

नज़र रहती है, नज़र रहती है
ये नज़र साथियो बहुत कुछ कहती है

डॉक्टर की रोग पर,
कामी की भोग पर,
हमें छुट्टी के संयोग पर, और..... और
पक्का आने वाले 8वें वेतन आयोग पर

नज़र रहती है, नज़र रहती है
ये नज़र साथियो बहुत कुछ कहती है

बारिश की मस्ती



अमनदीप सिंह
लेखाकार, शिकायत कक्ष

बादलों की टोली आई,
पानी की बौछार लाई ।
नाचते हैं पेड़-पौधे,
हर तरु खुशबू समाई ।

छप-छप करती सड़कें,
मिट्टी से उठती सौंधी महक
कागज की नावें बहतीं,
बच्चों की शरारती चहक ।

छतरी संग घूमे लोग,
रिमझिम का लुत्फ उठाते ।
चाय की चुस्की संग,
पकोड़े भी मुँह में जाते ।

मेंढकों की टर-टर
और चिड़िया का गीत ।
बारिश का यह मौसम,
लाता है नई उम्मीद ।

छत पर नाचें बूँदें,
मन भीग जाए हर ओर ।
बारिश की यह मस्ती,
सबको लगती है भोर ।

चमकती है बिजली जब,
धड़कनें तेज हो जातीं ।
पर उसकी रोशनी में भी,
अपनी खुशियाँ हम पाते ।

धूप-छाँव का खेल,
कभी गीला, कभी सूखा ।
बारिश का यह मजेदार रंग,
हर दिल को है भाता ।

आओ मिलकर नाचें,
बारिश के इस संग ।
हँसी-खुशी में डूब जाएँ,
मस्ती में भर जाए रंग ।

पर्यावरण की महता



रितेश गुप्ता
लेखाकार, प्रशासन-I

हरी-भरी वादियाँ हरियाली की चादर,
नदी की कल-कल पंछियों का गान,
पेड़ों की शाखों पर पत्तों की सरसर,
प्रकृति की गोद में है सारा जहान ।

बारिश की बूंदों की छम-छम
मिट्टी की खुशबू का नम-नम,
हरे मैदानों की हरियाली,
मोर का नाच और हवा की ताजगी ।

नीले आसमान में बादलों की टोली,
सूरज की किरणें चमकती हैं प्यारी,
चाँदनी रात में तारों की होली,
मन मोह लेती है यह दुनिया सारी ।

प्रकृति की रक्षा हम सबका कर्तव्य,
स्वच्छ रखें इसे हर रोज का उद्देश्य,
भविष्य की धरोहर सुरक्षित हो पर्यावरण,
आओ मिलकर बनाएँ हरियाली का भवन ।

झरनों की आवाज संगीत सा लगता,
फूलों की खुशबू मन को लुभाती,
वन्य जीवन का नृत्य अद्भुत सा दिखता,
हर पल यहाँ खुशियाँ बरसाती ।

रितेश गुप्ता
लेखकार (प्रशासन-I)

नदी की धारा में बहती सजीवता,
पेड़ों की छांव में बसी शांति की महत्ता,
हरे-भरे जंगलों की कहानी,
धरती की गोद में खिलती है जवानी ।

पक्षियों का कलरव बयार की सरगम,
फूलों की खुशबू हरियाली का संगम
सूरज की किरणें चमकते सितारे,
प्रकृति के रंग में रंगे ये नजारे ।

पेड़ हमारे साथी जीवन का आधार,
सांसों की डोरी इनके बिना बेकार,
आओ मिलकर करें पर्यावरण को प्यार,
सुरक्षित रखें धरती ये है हमारा अधिकार ।



मेरी माँ सबसे प्यारी



विक्रम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
राजभाषा अनुभाग

छोटे से बड़ा हुआ
अपने पैरों पर खड़ा हुआ
माँ का काला टिका लगाना
यानी नजर से है बचाना
माँ का प्यार से समझाना
यानी सुधार है लाना
माँ का हमें गोद में खिलाना
और लोरी गा कर हमें सुलाना
माँ का स्वादिष्ट खाना बनाना
और हमारे मुँह में पानी आना
ऐसे छोटे से बड़ा हुआ
अपने पैरों पर खड़ा हुआ
ऐसी दुनिया में ना कोई शक्ति
जो तोड़ सके माँ की भक्ति
माँ की ममता और माँ का प्यार
उसके बाद ये सारा संसार
जीवन में क्या खोया क्या पाया
माँ के बिना ना ये समझ पाया
माँ की ममता के आगे सब फीका
फिर क्या खट्टा क्या मीठा
जीवन का अमृत जीवन का ज्ञान
उसके बिन सब अज्ञान
फिर क्या आइंस्टीन और क्या विवेकानंद
सबने ने पाया अपने माँ के आंचल में आनंद
माँ का आंचल सबसे न्यारा
उसमें तो संसार है सारा
माँ का आंचल लगता ऐसा
नीला आसमान हो जैसा

उसके नीचे ना बारिस लगे ना धूप
ये तो बस माँ का है एक रूप
ऐसे कितने रूप हैं उसके
उसकी ख्याति जग में न्यारी
ऐसी ही है मेरी माँ प्यारी
छोटे से बड़ा हुआ
अपने पैरों पर खड़ा हुआ
गोद में उसकी जब में कलरव करता
उसका प्यार उसकी ममता
फिर भी मेरा जी न भरता
मेरी हर चपलता लगती उसको प्यारी
ऐसी ही है मेरी माँ प्यारी
छोटे से बड़ा हुआ
अपने पैरों पर खड़ा हुआ
दुनिया सारी वैसी की वैसी
पर कोई नहीं है माँ तेरे जैसी
आज जीवन में जो इतनी मायूसी भरी हुई है
माँ तेरे बिना सारी दुनिया ठहरी हुई है
आज जब मैं उसको याद करता
तब फिर मेरा मन न भरता
उसकी लालसा उसकी ममता
उसके बिन है जीवन में जड़ता
छोटे से बड़ा हुआ
अपने पैरों पर खड़ा हुआ
मेरी माँ सबसे प्यारी
मेरी माँ सबसे न्यारी

नारी



पंकज अरोड़ा

नारी री है तू;
या ना री हूँ मैं ।
जन्म से ही अस्तित्व हीन सी,
एक सखी तू, एक सखी मैं ।
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं ।

भ्रूण को पैदा करती,
इच्छा को मारती,
कुछ सपने हैं तेरे, कुछ सपने हैं मेरे,
उड़ जाऊँ पंख लिए में असामान को छूने
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं !

पढ़ लिख कर सबल बनूँ मैं,
उँचाइयों को छू लूँ,
पिता के आँगन में अंगड़ाईयों में झूलूँ,
पल में आँख खुली, और सपना टूटा !
अब ये क्यों मुझसे,
पिता का आँगन छूटा ?
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं ।

नये घर का सपना संजोकर,
मैं डोली में बैठी,
पर ना था वो घर अपना,
न समझी मैं थी इतनी भोली !

नारी री है तू;
भ्रूण को कोख में पाले,
मैं इठलाती,
हर घर के सपने सजाती ।
नारी री है तू;
या न री हूँ मैं ।

टूटे सपने छूटे अपने,
जब आँगन चिड़ियाँ चहके,
त्याग से तेरे त्याग से मेरे,
दूजे की बगियाँ महके ।
नारी री है तू;
या नारी हूँ मैं !

छूट गया उड़ने का सपना,
कुछ भी नहीं है,
अब मेरा अपना,
उनके लिए सोउँ उनके लिए जागूँ,
हर पल उनके पीछे भागूँ,
जिनको मोल नहीं है मेरा,
वो कहते क्या है तेरा ?
सब कुछ तो है मेरा ।
अस्तित्व मिट गया है तेरा,
अस्तित्व मिट गया है मेरा ।
नारी री है तू;
या ना री हूँ मैं !

अब उठ तू सबल बन,
 अपनी शक्ति का आहवाहन कर ।
 दिखा दे दुनिया को,
 अपने को पहचान कर ।
 नारी री है तू;
 या ना री हूँ मैं ।
 बिन तेरे सृष्टि नहीं,
 किसी के पास ऐसी दृष्टि नहीं,
 तू जग की दृष्टि बन ।
 नारी री है तू;
 या ना री हूँ मैं !
 दीया नहीं अब ज्योति बन,
 जीत की तू मशाल बन,

दिखा दे दुनिया को,
 बिन तेरे कुछ नहीं ।
 नारी री है तू;
 या नारी हूँ मैं ।
 केवल नारी ही नहीं,
 तू अब वो प्रकृति बन,
 हर जीवन का कण-कण है तू,
 अब तू वह शक्ति बन ।
 नारी री है तू;
 और नारी हूँ मैं ॥

पंकज अरोड़ा
 लेखाकार
 (वित्त एवं विनियोग लेखे)

हमारी प्यारी धरती



विधांश अरोड़ा

हमारी प्यारी धरती, हमारी प्यारी धरती ।
 नीली और चमकदार
 हमारी प्यारी धरती, हमारी प्यारी धरती ।
 जीवन की अकेली हकदार,
 सूरज देता इसको जीवन ज्योति
 हमारी प्यारी धरती, हमारी प्यारी धरती ।
 सभी के सुंदर घरों को सजाती,
 हर जीव को प्यार से सहलाती ।
 हमारी प्यारी धरती, हमारी प्यारी धरती ।
 सभी को भोजन देती,
 हर जरूरत क्षण-भर में पूरा कर देती ।

हमारी प्यारी धरती, हमारी प्यारी धरती ।
 हम है इसके नन्हें सिपाही,
 न करेंगे गंदगी, न जल बेकार करेंगे ।
 पेड़ लगायेंगे,
 इसकी रक्षा करेंगे
 यह है हमारी धरती, ये है हमारी धरती ।
 यह है हमारी धरती, ये है हमारी धरती ।

विधांश अरोड़ा पुत्र श्री पंकज अरोड़ा
 लेखाकार
 (वित्त एवं विनियोग लेखे)

बीते लम्हे



नरेन्द्र कुमार

कब करे दिल ये मोहब्बत
नौकरी पूरा दिन खा रही,
जीवन बहुत मुश्किल हो जाना,
अगर नौकरी ही ना रही ।

चंडीगढ़ में लगी है नौकरी,
मन बड़ा ही गदगद था ।
क्या सपने थे, और क्या लगा है ?
मन बस इसी बात से डगमग था ।

कर नैसला ! आया मैं नियुक्ति लेने,
और बड़ा सुहावना मौसम था ।
बैठ पास, नवे सहकर्मों के,
मन बड़ा ही रोशन था ।

रंग बिरंगे फूल खिले थे,
अरमानों के इस दिल में
दिन में रिम झिम, रात में बारिश
सावन वाला मौसम था ।

आया था ऑफिस में मैं जब,
नजारा बड़ा ही औसम था ।
कुछ दोस्त बने नये,
कुछ का चेहरा गुमसुम था

मेरी धड़कन बन गये हो तुम सब,
तारीफ को अल्फाज नहीं मिलते ।
कुछ कंजूस, कुछ कतई मक्खी चूस,
सबका अपना हुनर, अन्दाज नहीं मिलते ।

अब न निकलोगे तुम इस सीने से,
याद करो वो हिलती रातें ।
जब सारे बैठा करते थे,
और कहते थे कुछ खास नहीं,
सोमरस पीने से ।

सुबह ऑफिस, शाम लगाते,
किसी पार्क के चक्कर से,
कुछ ने पी रखा घाट घाट का पानी,
और कुछ थे एक ही थाली के चट्टे-बट्टे से ।

जोर जबरदस्ती घूमने रहते,
टांगों में थकान लिए,
क्यों आये हैं इतनी दूर घूमने ?
सारे उल्लू के पट्टे से ।

आँखों से दीदार वो करना,
हर लड़की के आने पे,
लगा है खुद की तितली देख,
दोस्तों को चुप कराने में ।

उपर से फिर ये कहता,
उसके जैसी लड़की नहीं कोई,
यकीं नहीं तो ढूँढ लो मिलकर,
मिल जाए तो इस जमाने में ।

गया जमाना ! जब शोर मचाया करते थे,
कुछ बचपन बाकी था तो,
एक-दूजे की खूब खिल्ली उड़ाया करते थे,
जहां मिल जायें, हंसी-ठट्टे उसी मोड़ पर,
फिर ये कहना कि हम घर गृहस्थी वाले लड़के,
ऐसी तो बातें नहीं करते थे ।

नरेन्द्र कुमार

लेखाकार (प्रशासन-2)

मजबूरियाँ



विक्रम सिंह

किस-किस से क्या-क्या करवाती है, ये मजबूरियाँ
बच्चों से चौराहे पर गाड़ियों के शीशे साफ करवाती हैं, ये मजबूरियाँ
विकलांग, विवश से चौराहे पर भीख मंगवाती हैं, ये मजबूरियाँ
कोई कुछ देता है तो कोई दुत्कारता है,
लेकिन फिर भी जीवन का बोझ ढुलवाती हैं, ये मजबूरियाँ

ग़रीब जब पिसता है जिम्मेदारी और ग़रीबी के बीच,
परिवार की जरूरतों को कैसे-कैसे पूरा करवाती हैं, ये मजबूरियाँ
कोई जागता है रातों को तो कोई सोता ही नहीं,
जिम्मेदारियों का बोझ कैसे-कैसे उठवाती हैं, ये मजबूरियाँ

कोई मस्त है जीवन की चकाचौंध में,
तो किसी से दो वक्त की रोटी के लिए, दिन रात काम करवाती हैं, ये मजबूरियाँ
किस्मत के लेख किसने देखे, लेकिन क्य-क्या दिखाती हैं, ये मजबूरियाँ
कोई बहुत पढ़ा लिखा है तो कोई कम,
पर सबसे ज़िंदगी के मैदान में दौड़ लगवाती हैं, ये मजबूरियाँ

जिनके पढ़ने-लिखने की थी उम्र, वे घर को चला रहे हैं,
और हम उनको चाय की दुकान पर छोटू-छोटू बुला रहे हैं
वो छोटू कितना बड़ा है हम ये न पहचान रहे हैं ।
उसकी भी है उम्र खेलने की, लेकिन मजबूरियाँ उसका बचपन सुखा रही हैं
सूखा जीवन, सूखी खुशियाँ, उसकी तो हंसी भी सूख रही हैं, ये मजबूरियाँ
हमें क्या पता, हम तो चाय पीने में खुशी जता रहे हैं ।
उसका तो घर ही चला रही हैं, ये मजबूरियाँ

जीवन की भाग-दौड़ में सब भागे जा रहे हैं और सबको दौड़ा रही है, ये मजबूरियाँ
किसी की दुकान तो किसी का व्यापार किसी का मकान चला रही हैं, ये मजबूरियाँ

किस-किस से क्या-क्या करवाती हैं, ये मजबूरियाँ
किस-किस से क्या-क्या करवाती हैं, ये मजबूरियाँ

विक्रम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
(राजभाषा अनुभाग)

हिंदी दिवस/पखवाड़ा-2023 के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागी

क्रम सं	प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगी का नाम
1.	हिंदी निबंध	श्री पंकज अरोड़ा, लिपिक (प्रथम)
2.	भाषण	श्री आशीष कुमार, लेखाकार (प्रथम)
3.	हिंदी शब्द ज्ञान	श्री अंकित कुमार ठाकुर, लेखाकार
4.	कंप्यूटर टाइपिंग	श्री सुशील कुमार लिपिक (प्रथम) श्री दिनेश कुमार डी०ई०ओ० (द्वितीय)
5.	कविता पाठ	श्री चाँद सिंह, वरिष्ठ लेखाकार (प्रथम) श्री राज कुमार, वरिष्ठ लेखाकार (द्वितीय)

हिंदी प्रोत्साहन योजना के विजयी प्रतिभागी

क्रम संख्या	नाम सर्व श्री/श्रीमती	पदनाम	अनुभाग
1.	श्री राजकुमार	लेखाकार	पेंशन-1 अनुभाग
2.	श्री इन्द्र सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	निधि पत्राचार 1
3.	श्री विधु सिंह	लिपिक वरिष्ठ	निधि-1
4.	श्री विनोद कुमार	लेखाकार	विभागीय कैटीन
5.	श्री आशीष कुमार	लेखाकार	पेंशन-12
6.	श्री सोहन लाल	वरिष्ठ लेखाकार	वरि. उप-महालेखाकार (प्र.) साचिवालय
7.	श्री राधा कृष्ण	लेखाकार	बुक अनुभाग
8.	श्री पंकज अरोड़ा	लिपिक	वित्त एवं विनियोग

गृह पत्रिका नवकिरण के श्रेष्ठ लेखकों हेतु पुरस्कार

क्रम संख्या	नाम सर्व श्री/श्रीमती	पदनाम	पुरस्कार
1.	दरवेश राही	लेखा अधिकारी	प्रथम (रु. 1200)
2.	नरेन्द्र कुमार	लेखाकार	द्वितीय (रु. 1000)
3.	अंकित कुमार ठाकुर	लेखाकार	तृतीय- (रु. 800)

आप के पत्र



पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं छायांकन अति आकर्षक है।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं छायांकन अति आकर्षक है। पत्रिका की सभी रचनाएं उत्कृष्ट कोटि की हैं। विशेषकर सुश्री पूजा सिंह मंडल का लेख “हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता”, श्री आशीष कुमार की कविता, “एक दिन का देशभक्त”, श्री नरेंद्र बोद्ध की कविता ‘जीवन’ एवं पंकज अरोड़ा का लेख “कुछ पल ठहर तो सही” आदि रचनाएं सराहनीय एवं संग्रहणीय हैं। एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को बखूबी समाहित किया गया है जो उल्लेखनीय है। कार्यालय गतिविधियों के चित्र पत्रिका में चार-चाँद लगा रहे हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

गिरिशराज

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा-I),
ओडिशा, भुवनेश्वर

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायी हैं।

राजभाषा हिंदी के विकास में योगदान स्वरूप पत्रिका ‘नवकिरण’ के 42वें अंक का ई-संस्करण डिजिटल रूप में आज सहजता से सभी पाठकों के हाथों में पहुँच चुका है। पत्रिका की साज-सज्जा, विषय एवं आवरण पृष्ठ स्वतः ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करने वाली हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल उच्चकोटि की हैं बल्कि ज्ञानवर्धक व प्रेरणादायी भी हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के

हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सतत् प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्थिक शुभकामनाओं सहित।

अरूण

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
बिहार, पटना

पत्रिका का मुख्य और पार्श्व पृष्ठ आकर्षक है।

पत्रिका का मुख्य और पार्श्व पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर सुश्री पूजा सिंह मंडल का लेख “हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता”, श्री आशीष कुमार की कविता “एक दिन का देशभक्त” श्री नरेंद्र बोद्ध की कविता “जीवन”, श्री संदीप कुमार मान की कविता “एक सप्ताह”, श्री विक्रम सिंह की कविता “आज फर्ज का इम्तिहान” एवं श्री लोकेश का लेख “मायका” आदि सराहनीय हैं।

पत्रिका के कुशल एवं सफल सम्पादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। कार्यालय परिवार पत्रिका की अविरल प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

साधना राय

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) प्रथम,
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है ।

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह ई-पत्रिका “नवकिरण” का 42वाँ (वर्ष 2023) अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है । इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक है ।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ ।

कीर्ति श्री

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर, ओडिशा ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएं ।

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका “नवकिरण” के 42वें ई-अंक की प्राप्ति हुई । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं । पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है । साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है । कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली है । इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगें, वो हैं- आज फर्ज का इम्तिहान”, मायका, छोड़ चला माँ मैं”, “वह कौन है ?”, बेरोजगार और कुंवारा, आदि ।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मक में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं ।

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा-II),
पश्चिम बंगाल

राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है ।

आपके कार्यालय की पत्रिका “नवकिरण” के 42वें ई-अंक की प्राप्ति हुई । पत्रिका भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार । पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रूचिकर एवं प्रेणादाय है । इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है ।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री नरेन्द्र बौद्ध की कविता “जीवन” श्री आशीष कुमार का लेख “बेरोजगार और कुंवारा” तथा श्री विक्रम सिंह की कविता ‘छोड़ चला माँ मैं’ प्रशंसनीय है ।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है । सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल की पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

हिंदी अधिकारी

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (ले. व हक),
असम, गुवाहाटी

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रूचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं ।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित “नवकिरण” के 42वाँ अंक प्राप्त हुआ । इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रूचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं । पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है । कार्यालयीन गतिविधियों से छायाचित्र भी मनमोहक हैं ।

श्री आशीष कुमार की “एक दिन का देशभक्त”, श्री पंकज अरोड़ा की “कुछ पल ठहर तो सही”, श्री अंकित कुमार ठाकुर की “प्रेम” श्री राज कुमार की “वह कौन है ?” रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

एकता

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा),
पंजाब, चण्डीगढ़

मौलिक सोच तथा सृजनात्मकता की सुंदर अभिव्यक्ति पत्रिका में दृष्टिगत होते हैं।

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिंदी पत्रिका “नवकिरण” के 42वाँ संस्करण की प्राप्ति हुई। पत्रिका की साज-सज्जा तथा विषयों की प्रस्तुति का ढंग अत्यंत सुंदर है। प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक व उच्च कोटि की हैं। इसके अलावा पत्रिका में सम्मिलित तस्वीरें इस पत्रिका को और अधिक आकर्षक बनाती हैं। साथ ही मौलिक सोच तथा सृजनात्मकता की सुंदर अभिव्यक्ति इसमें दृष्टिगत होती हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए आपको ढेर सारी शुभकामनाएं।

धनराजन

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
बेंगलूरु

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका “नवकिरण” के 42वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत मनमोहक है। महत्वपूर्ण विषय पर लिखा गया लेख हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता विशेष रूप से सराहनीय है। इसके अतिरिक्त अन्य रचनाएं जैसे एक दिन का देशभक्त, प्रेम और वह कौन है ? पठनीय व प्रेरक हैं।

हिंदी पत्रिकाएं हमें कार्यालय में वर्षभर आयोजित होने वाली विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय कार्यक्रमों से अवगत करवाने के साथ ही कार्मिकों की रचनात्मक व सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है। इससे कार्यालय में पठन-पाठन एवं सृजन का एक अनूठा वातावरण तैयार होता है तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी सहायक होती हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए आपको ढेर सारी शुभकामनाएं।

शैलेन्द्र विक्रम सिंह

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा),
हरियाणा, चण्डीगढ़।

है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी :- मैथिलीशरण गुप्त

हिंदी पखवाड़ा - 2024 : पुस्तक प्रदर्शनी



पुस्तकों का अवलोकन करते हुए कार्यालय के सदस्य



पुस्तक प्रदर्शनी में सभा को संबोधित करते हुए
प्रधान महालेखाकार महोदय



प्रधान महालेखाकार महोदय पुस्तकों का अवलोकन करते हुए



साहित्य चर्चा



दीप प्रज्ज्वलित करते हुए



दीप प्रज्ज्वलित करते हुए

हिंदी पखवाड़ा - 2024 : पुस्तक प्रदर्शनी



हिंदी पखवाड़ा - 2024 : पुस्तक प्रदर्शनी



हिंदी पखवाड़ा - 2024



मुख्यालय द्वारा आयोजित ऑनलाईन कार्यशाला



मुख्यालय द्वारा आयोजित ऑनलाईन कार्यशाला



हिन्दी पखवाड़ा 2024 में आयोजित कविता पाठ प्रतियोगिता



हिन्दी पखवाड़ा 2024 में आयोजित चित्रकारी प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के साथ वरिष्ठ उप-महालेखाकार महोदया



पखवाड़ा के दौरान आयोजित कार्यालय में प्रतिभागी



कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए अतिथि वक्ता

सांस्कृतिक एवं अन्य आयोजन



तीज समारोह में महिला सदस्य



रंगोली बनाते हुए सदस्य



क्रिकेट टूर्नामेंट 2024 विजय ट्रॉफी के साथ



क्रिकेट टूर्नामेंट - 2024



क्रिकेट टूर्नामेंट - 2024



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदय विजेताओं के साथ

सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं अन्य आयोजन



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए
मुख्य अतिथि एवं प्रधान महालेखाकार महोदय



क्रिकेट टूर्नामेंट ट्रॉफी का अनावरण



योग दिवस



योग दिवस



हॉकी टूर्नामेंट



पंजाबी भंगड़ा

कार्यालयपयोगी वाक्यांश - द्विभाषी

- संपादक

1. Audit observed that rates of interest to be charged for each type of loans/advance were not fetched in records.	1. लेखापरीक्षा में देखा गया कि प्रत्येक ऋण/अग्रिम हेतु प्रभारित किए जाने वाली ब्याज की अभिलेखों में दर्ज नहीं थी।
2. The policy was issued without the approval of the competent authority.	2. नीती को सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन के बिना जारी किया गया था।
3. The reply of the ministry is not acceptable.	3. मंत्रालय का जवाब स्वीकार्य नहीं है।
4. The State Government did not furnish the information in relevant format for disclosing this information.	4. राज्य सरकार ने इस सूचना के प्रकटीकरण हेतु सूचना को प्रासंगिक प्रारूप में प्रस्तुत नहीं किया।
5. Position regarding bilingual website and the information provided on the website.	5. वेबसाइट के द्विभाषीकरण तथा उस पर उपलब्ध करवाई गई जानकारी की स्थिति।
6. The policy was issued without the approval of the competent authority.	6. नीति को सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन के बिना जारी किया गया था।
7. Test check in audit revealed following deficiencies	7. लेखापरीक्षा की नमूना जांच से निम्नलिखित कमियों का पता चला।
8. Draft reply on the lines suggested above may be put up	8. उपयुक्त सुझावों के आधार पर उत्तर का मसौदा पेश करें।
9. Examine the proposal in the light of observation at "A".	9. "क" पर उल्लिखित टिप्पणी को ध्यान में रखते हुए प्रस्ताव की जांच करें।
10. This mutual transfer is not in public interest.	10. यह पारस्परिक स्थानांतरण लोकहित में नहीं है।
11. Audit observed that there were delays in finalization of plans for most of the years.	11. लेखापरीक्षा में पाया गया कि अधिकांश वर्षों हेतु योजनाओं को अंतिम रूप देने में विलंब हुआ था।
12. Thus, the actual growth rates were much lower than the projected rates.	12. इसी प्रकार, वास्तविक वृद्धि दर प्रक्षेपित दरों की तुलना में बहुत कम थी।
13. However, the procurement continues.	13. हालांकि खरीद जारी है।
14. This concern has not been addressed so far.	14. इस मामले पर अभी तक विचार नहीं किया गया है।
15. The reply confirms the fact that	15. उत्तर इस तथ्य की पुष्टि करता है।
16. Further, reasons for the lapse be examined.	16. इसके अलावा, चूक के कारणों की जांच भी की जाए।
17. Necessary responsibility should be fixed.	17. आवश्यक उत्तरदायित्व तय किया जाए।
18. The criteria was fixed on the basis of the adopted principles.	18. मानदंड अपनाए गए सिद्धांतों के आधार पर तय किए गए थे।
19. Matters relating to this period have also been included.	19. इस अवधि से संबंधित मामलों को भी शामिल किया गया है।
20. This was against the financial interests.	20. वह वित्तीय हितों के विरुद्ध था।
21. Mention the back reference in this case.	21. इस मामले में पिछले संदर्भ का हवाला दें।
22. Arrange the entries in chronological order.	22. प्रविष्टियों को तिथि क्रमानुसार व्यवस्थित करें।
23. In this connection the reply has been given earlier.	23. इस संबंध में, उत्तर पहले ही दिया जा चुका है।
24. The daily reports are being sent regularly.	24. दैनिक रिपोर्ट नियमित रूप से भेजी जा रही है।
25. We need to fix a date for the next meeting.	25. अमें अगली बैठक की तारीख तय करनी है।

